RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 26 जून 2018

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका जुलाई 2018

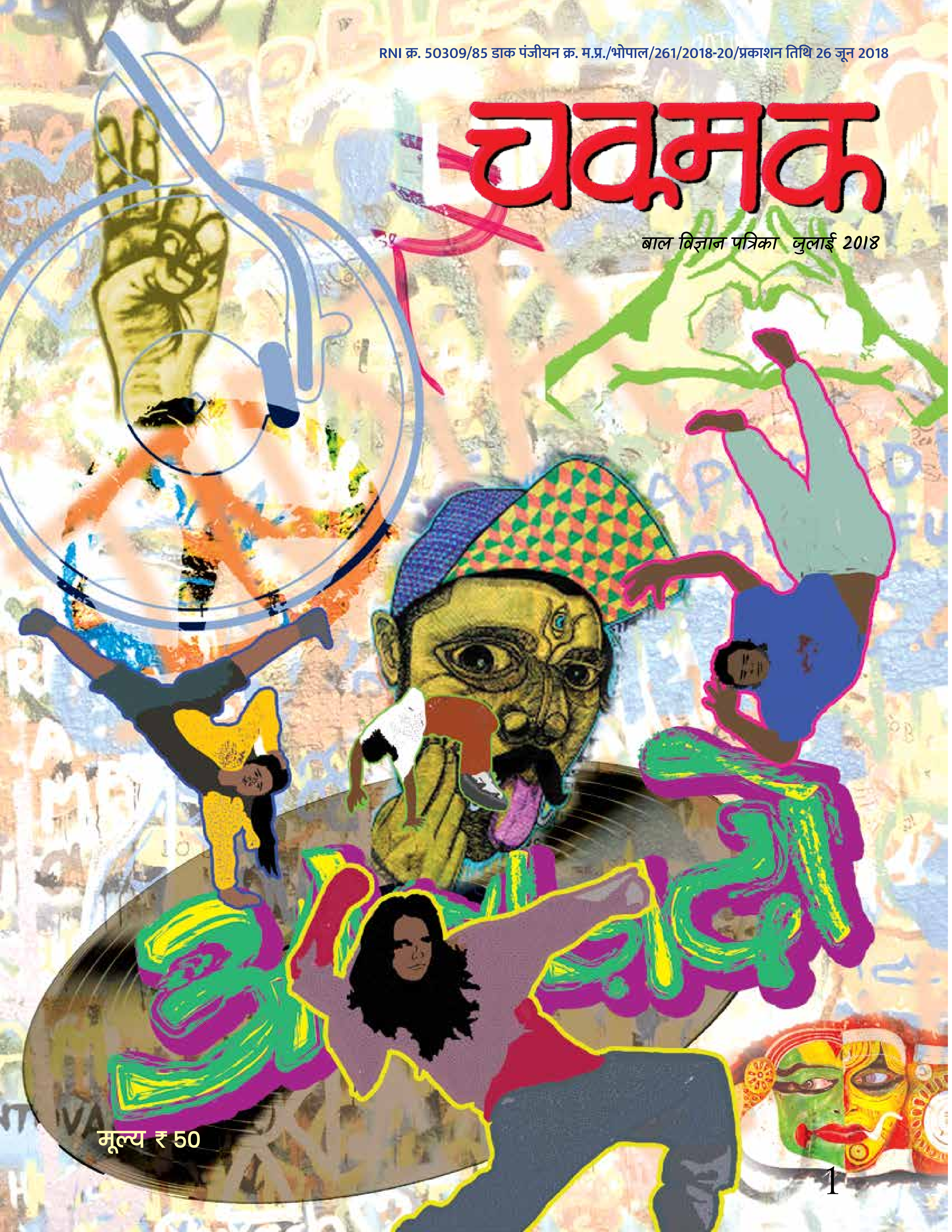

मूल्य ₹ 50

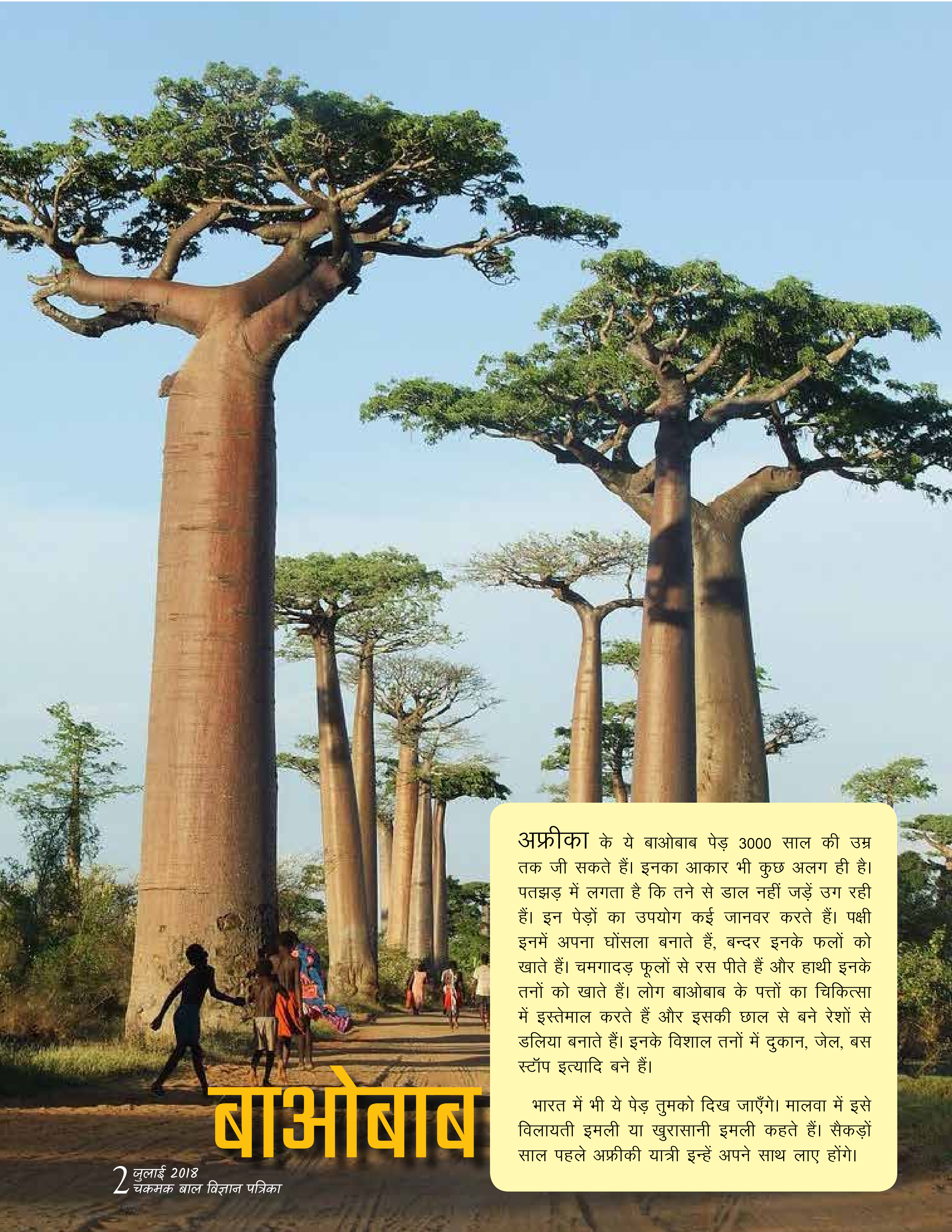

बाओबाब

अफ्रीका के ये बाओबाब पेड़ 3000 साल की उम्र तक जी सकते हैं। इनका आकार भी कुछ अलग ही है। पतझड़ में लगता है कि तने से डाल नहीं जड़ें उग रही हैं। इन पेड़ों का उपयोग कई जानवर करते हैं। पक्षी इनमें अपना घोंसला बनाते हैं, बन्दर इनके फलों को खाते हैं। चमगादड़ फूलों से रस पीते हैं और हाथी इनके तनों को खाते हैं। लोग बाओबाब के पत्तों का चिकित्सा में इस्तेमाल करते हैं और इसकी छाल से बने रेशों से डलिया बनाते हैं। इनके विशाल तनों में दुकान, जेल, बस स्टॉप इत्यादि बने हैं।

भारत में भी ये पेड़ तुमको दिख जाएँगे। मालवा में इसे विलायती इमली या खुरासानी इमली कहते हैं। सैकड़ों साल पहले अफ्रीकी यात्री इन्हें अपने साथ लाए होंगे।

अंक 382 जुलाई 2018

चकमक

बारिश

मन करता है मेरा
बारिश के पानी में मैं
अपनी छोटी नाव चलाऊँ
मन करता है मेरा
मैं भी मोर की तरह नाचूँ
मन करता है मेरा पानी के गड्ढों में
झम से कूदूँ और नहाऊँ
मन करता है मेरा
कीचड़ में उछलूँ-कूदूँ
मन तो करता बहुत कुछ है
पर मम्मी मना करती हैं
अब मैं क्या करूँ

-वैष्णवी गोस्वामी, अक्षत धामीजा, आरव दुबे, प्रखर व मृंगाक, तीसरी, सेंट फ्रांसिस स्कूल, लखनऊ, उ. प्र.

चित्र: कनक शशि

इस बार

बाओबाब	2
बारिश	3
घर में पानी टपकता है - नन्दिनी विश्वकर्मा	4
हॉप से हिप-हॉप तक - सजिता नायर	5
गणित है मज़ेदार	10
बिनिया - शशि सबलोक	11
सेंटर कोर्ट पर.... - रुद्राशीष चक्रवर्ती	13
खिड़की, हवा, मछली और मैं - ज़ेबा खातून	17
बैंगन आया, भिण्डी आई - कीर्ति व दीपिका	18
पाचन - उमा सुधीर	19
...सबकी रातें... - श्वेता नाम्बियार	22
काम 2 - सी एन सुब्रह्मण्यम्	24
छिपकली! - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन	28
मेरा पन्ना	30
सूर्य की किरण - विनोद कुमार शुक्ल	31
मेरा पन्ना	36
माथापच्ची	41
चित्रपहेली	43
गाय मिली थाने में - प्रभुदयाल श्रीवास्तव	44

आवरण चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

डिज़ाइन
कनक शशि

सम्पादकीय सहयोग
सी एन सुब्रह्मण्यम्
कविता तिवारी
सजिता नायर
गुल सारिका झा

सलाहकार
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव
ब्रजेश सिंह

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

चित्र: रोहन वानी, छटी, आनन्द निकेतन, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

घर में पानी टपकता है

नन्दिनी विश्वकर्मा

मोर घर खपड़ा वाला है। बहुत पानी गिरथे तो मोर घर में बहुत पानी आथे। ओकर बाढ़ बर्तन रखतन। मगर फिर भी थोड़ा-थोड़ा पानी बिस्तर में गिरथे। मम्मी कोयला के काम से आथे तो बर्तन के पानी से मुँह-कान धोते। फिर बाड़ी में जाए के ज़रूरत नहीं पड़े।

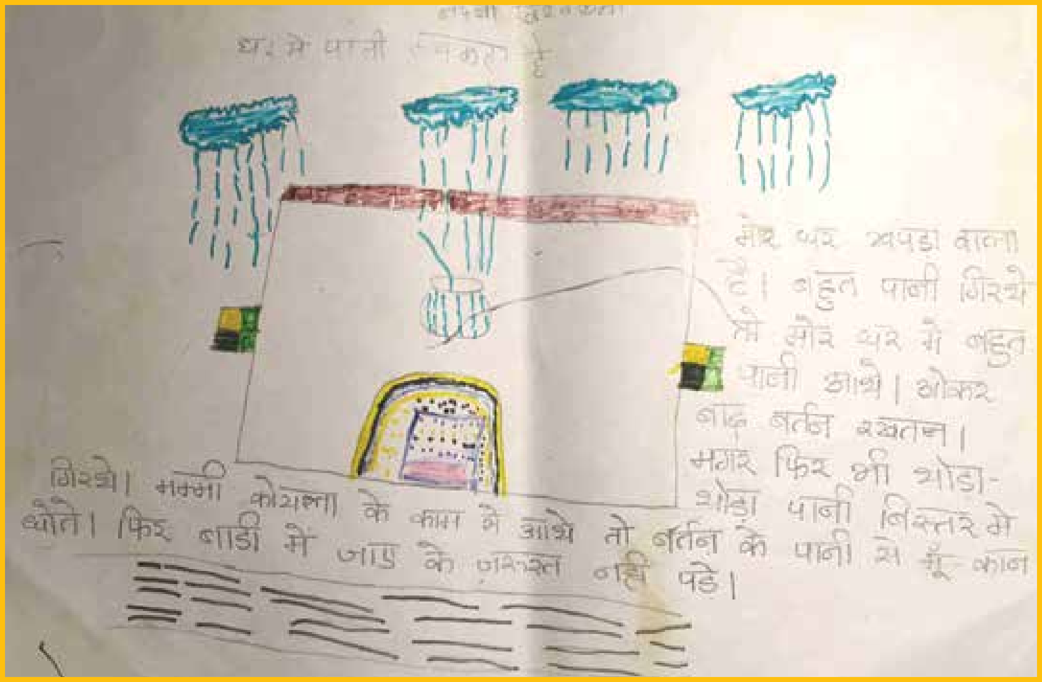

चित्र: नन्दिनी विश्वकर्मा, शहीद स्कूल , बीरगांव, रायपुर , छत्तीसगढ़

हॉप से हिप-हॉप तक

सजिता नायर

"गली का एक हिस्सा होने का मतलब था डांस फ्लोर पर कुछ नया करना। और इससे कोई फर्क नहीं पड़ना कि हम क्या पहने हुए हैं, हम किस स्कूल या किस मोहल्ले से आए हैं। क्योंकि गलियों की सबसे अच्छी बात यही है कि वहाँ यह मायने नहीं रखता कि आपके पास क्या है बल्कि यह कि आपके पास जो है उससे आप क्या करते हैं।"

–स्टेप अप 2 फिल्म

हिप-हॉप का नाम सुनते ही तुम नाच व गाने की कुछ खास किस्मों के बारे में सोचने लगे होगे। लेकिन हिप-हॉप इससे कहीं ज़्यादा है। यह स्ट्रीट कल्चर है, गली-मोहल्ले की संस्कृति जो हिप-हॉप कल्चर के नाम से मशहूर है। इसका आरम्भ 1960 के दशक में हुआ था। न्यू यॉर्क के सबसे गरीब इलाकों में से एक साउथ ब्रॉन्क्स हिप-हॉप की जन्मस्थली है। हिप-हॉप कल्चर की शुरुआत ब्रेकडांसिंग, रैपिंग, डीजेइंग से हुई। बाद में दूसरी कई कलाएँ इसका हिस्सा बन गईं मसलन ग्रेफिटी, स्केटिंग और बीएमएक्स फ्रीस्टाइलिंग।

रैप से शुरुआत

1960 के दशक में अमरीका के कुछ शहरों में शाम को लोग अपनी गलियों में छोटे-छोटे झुण्ड में इकट्ठा हुआ करते थे। ये अफ्रीकी-अमरीकी (अमरीका में बसे अफ्रीकी) और लैटिनो (लैटिन अमरीकी) थे जो वहाँ के वंचित समुदायों में से थे। इन झुण्डों में दोनों ही समुदाय के युवा संगीत, नृत्य और टोस्टिंग के ज़रिए नस्लवाद, गरीबी, और उनको प्रभावित करने वाले दूसरे राजनीतिक मसलों के प्रति अपने गुस्से को व्यक्त करते थे। टोस्टिंग के ज़रिए वे बताते थे कि ये सभी मुद्दे उन्हें किस तरह प्रभावित करते हैं। जिसे आज हम 'रैपिंग' कहते हैं दरअसल वही टोस्टिंग है। जब हम शब्दों को एक लयबद्ध रूप में रखते हैं तो वह रैप बन जाता है। इसमें बोलने की गति पर ध्यान रखना होता है। आमतौर पर यह हमारे दूसरे गीतों की गति से ज़्यादा तेज़ होता है जिससे गाने के बोल किसी 'टंग ट्विस्टर' की तरह लगते हैं। यह सही है कि टोस्टिंग के रूप में रैपिंग हमारे बीच पहले से मौजूद रही है लेकिन दुनिया का पहला रैप एल्बम द शुगरहिल गैंग का 'रैपर्स डिलाइट' 1979 में रिलीज़ हुआ था।

1980-90 के दशक को रैपिंग का स्वर्ण युग कहा जाता है। इसकी वजह है उस दौर के कलाकार और उनके लिखे व गाए हुए रैप। रैपर के बीच उस दौर के कलाकार आदर्श माने जाते हैं। वैसे 90 के दशक के दौरान और उसके बाद भी ऐसे कुछ कलाकार थे जो मानसिक अवसाद से लेकर राजनैतिक मसलों पर लिख रहे थे। ऐसे कुछ रैपर में टूपाक शाकुर और एमनैम शामिल हैं। इनके ज़्यादातर रैप में समाज में इनके अपने संघर्षों की अभिव्यक्ति है। ट्रम्प का अमरीका के राष्ट्रपति होने के प्रति अपनी नापसन्दगी ज़ाहिर करने वाले एक रैप के लिए एमनैम अभी हाल में खबरों में थे।

देसी रैप

हिन्दुस्तानियों में इस बात को लेकर बड़ी दुविधा है कि हमारा पहला रैप गीत कब बना। 1961 में अशोक कुमार व संजीव कुमार अभिनीत फिल्म *आशीर्वाद* में हरिन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय द्वारा लिखा 'रेलगाड़ी' नाम का एक गाना था-

रेल गाड़ी, रेल गाड़ी
छुक छुक छुक छुक...

इस पूरे गाने में रैप जैसी ही लयात्मकता है। अब यह एक संयोग है या सचमुच ही यह रैप है, यह कहना मुश्किल है। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि जैसे ही तुम इस गीत को सुनते हो यह किसी भी दूसरे रैप जैसा ही लगता है।

1991 में बाबा सहगल ने अपना पहला मान्य रैप गीत प्रस्तुत किया 'दिल धड़के'। इसे ज़्यादातर लोग पहला हिन्दुस्तानी रैप गीत मानते हैं। इसके थोड़े ही समय बाद, 1995 में आए गोविन्दा अभिनीत *गैम्बलर* फिल्म के मशहूर गीत 'मेरी मर्ज़ी' और 'स्टॉप दैट'। इन गीतों में देवांग पटेल की रैपिंग सुनने में बेहद आकर्षक लगती है। इन गीतों की धुन और रैपिंग के अलावा जो चीज़ इनको खास बनाती है वह है इनके बोल। 1995 के बाद गीतों के बीच में रैप प्रस्तुति का चलन तेज़ी से बढ़ा। गानों के बीच रैप के चलन की बाढ़-सी आ गई। 2003 का एक बड़ा लोकप्रिय गीत है 'मुँडया तू बच के रहीं' जिसे पंजाबी एमसी और जे-ज़ेड ने गाया था। यह गीत न सिर्फ भारत में बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिट हुआ था। 2007 में एक और मशहूर हिप-हॉप गीत हमारे सामने आया 'एक गलासी' जिसे देश की पहली महिला रैपर हार्ड कौर ने प्रस्तुत किया था।

आज भी बॉलीवुड में ऐसे कई गीत बनते हैं जिनके बीच-बीच में रैप होता है। मिसाल के लिए, *बद्रीनाथ की दुल्हनिया* का गीत 'तम्मा तम्मा', *ऐ दिल है मुश्किल* का 'ब्रेकअप सॉन्ग' और ऐसे ही कई गाने।

रैपर और उनके मुद्दे

रैप भले ही एक प्रतिवादी कल्चर के रूप में शुरू हुआ हो, आज वह पॉप्यूलर व्यावसायिक धारा का एक मुख्य हिस्सा बन गया है। रैप के जाने-माने कलाकारों में कुछेक ही हैं जो अपने रैप में उठाए गए मुद्दों के लिए मशहूर हुए हों। 2014 में 'ब्राइड्स फॉर सेल' (बिकाऊ

रेल गाड़ी रेल गाड़ी
छुक छुक छुक छुक...
फुलाए छाती, पार कर जाती
बालू रेत, आलू के खेत
बाजरा धान, बुड्ढा किसान
हरा मैदान, मन्दिर मकान
चाय की दुकान
पुल-पगडण्डी, किले पे झण्डी
पानी के कुण्ड, पंछी के झुण्ड
झोंपड़ी, झाड़ी, खेती-बाड़ी
बादल, धुआँ, मोट-कुआँ
कुएँ के पीछे, बाग-बगीचे
धोबी का घाट, मंगल की हाट
गाँव में मेला, भीड़ झमेला
टूटी दीवार, टट्टू सवार
रेल गाड़ी, रेल गाड़ी...

रेलगाड़ी:https://www.youtube.com/watch?v=TcLrPIE_18o

दुल्हनें) नाम का एक रैप वीडियो यूट्यूब पर वायरल हुआ। इसे अफगानिस्तान की सोनिता अलिज़ादेह ने अपलोड किया था। यह वीडियो इसलिए वायरल हुआ क्योंकि यह शादी के लिए बेटियों को बेचे जाने के मुद्दे पर था। सोनिता ने एक ईरानी डाक्यूमेंट्री फिल्मकार की मदद से यह वीडियो बनाया था। जब यह वीडियो बन रहा था उस समय सोनिता ईरान में रह रही थीं जहाँ औरतों के सार्वजनिक रूप से गाने पर प्रतिबन्ध था। एक और रैपर, भारत की सोफिया अशरफ ने राजनीतिक मुद्दों के लिए रैपिंग का इस्तेमाल किया है। सोफिया अशरफ को शुरू-शुरू में 'द बुर्का रैपर' के नाम से भी जाना जाता था। 'डोंट वर्क फॉर डॉउ' और 'कोडाइकनल वोंट' जैसे उनके रैप बड़ी कम्पनियों की लापरवाही के बारे में हैं जो औद्योगिक हादसों के होने पर उनकी ज़िम्मेदारी नहीं लेते हैं।

हिप-हॉप में नई ताल और चाल

आधुनिक रैप की लम्बी लिस्ट में मेरे पसन्दीदा गाने हैं *बियॉन्ड द क्लाउड्स* फिल्म का 'ऐ छोटे मोटर चला', और *मुक्केबाज़* का 'पैंतरा'। 'ऐ छोटे...' की धुन बड़ी आकर्षक है, और 'पैंतरा' को डिवाइन व डीजे न्युक्लिया ने बनाया है। इसलिए ये दोनों गाने मेरी ट्रेकलिस्ट में शामिल हैं। डीजे न्युक्लिया आज के सबसे मशहूर डीजे में से एक हैं। उन्होंने 'बेस रानी', 'लेट्स नाचो' जैसे लोकप्रिय गाने बनाए हैं।

डीजे यानी म्युज़िक सिस्टम का 'मास्टर'। डीजे इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के ज़रिये गानों में बीट्स या ताल जोड़ते हैं और एक साधारण से गाने को अलग ही स्तर पर ले जाते हैं। डीजे या डिस्क जॉकी शब्द 1930 के दशक में बना था। 1943 तक डीजे सिर्फ रेडियो के हिस्से हुआ करते थे। 1943 में जिमी सैवाइल ने पहली डीजे डांस पार्टी आयोजित की जिसमें उन्होंने अपने जैज़ रिकार्ड चलाकर अपने मेहमानों का मनोरंजन किया था। सैवाइल पहले वो व्यक्ति थे जिन्होंने संगीत लगातार चलाने के लिए टर्नटेबल का इस्तेमाल किया। तब से डीजेइंग, पार्टियों और हिप-हॉप कल्चर का ज़रूरी हिस्सा बन गया है।

1967 में डीजे क्लाइव कैम्पबेल जो डीजे कूल हर्क के नाम से मशहूर थे (जो हिप-हॉप कल्चर के प्रवर्तकों में से एक माने जाते हैं), जमैका से साउथ ब्रॉन्क्स आए। जल्द ही, अपनी दावतों और माइक्रोफोन पर दिए जाने वाले दिलचस्प भाषणों के कारण वे 'एमसी' (मास्टर ऑफ सेरिमोनीज़) बन गए। संगीत के बीच-बीच में वे लयबद्ध पाठ में घोषणाएँ किया करते थे। हिप-हॉप कल्चर और दावतों में डीजे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि उनकी तालों पर ही तो डांसर अपने स्टेप्स दिखाएँगे।

कूल हर्क को संगीत के साथ प्रयोग करना अच्छा लगता था। उन्होंने एक ही गाना एक ही समय में दो रिकार्ड प्लेयरों पर बजाना शुरू किया। एक गीत अमूमन 2-4 मिनट के लिए ही चलता है लेकिन वे

गीत को बीच में ब्रेक कर देते थे जिससे गीत को लम्बा करने में मदद मिलती थी। गीत के बीच में आने वाले इस ब्रेक में ही सुनने वालों के बीच में जो डांसर थे वो आगे आकर अपनी कला का प्रदर्शन करते थे। इस नृत्य को 'ब्रेकडांस' स्टाइल कहते हैं और इसमें डांस करने वालों को हर्क 'बी-बॉय्ज़' (ब्रेक बॉय्ज़) और 'बी-गर्ल्स' (ब्रेक गर्ल्स) कहते थे। तभी से हिप-हॉप या ब्रेकडांस की शुरुआत हुई। ये उन नृत्य शैलियों में से है जो बाकी सभी नृत्य शैलियों से घुला-मिला है मगर फिर भी अपनी खास पहचान बनाए हुए है। लोगों ने इसे कंटैम्परैरी, सालसा, टैप डांसिंग, बैले और तमाम दूसरी नृत्य शैलियों के साथ मिलाया है। *स्टेप अप* और *स्ट्रीट डांस* जैसी फिल्में इस खूबसरत मिश्रण की मिसाले हैं।

जब भी मैं किसी को रोबोटिंग, क्रम्पिंग, टटिंग, व्हैकिंग, बी-बॉयिंग्यं या बी-गर्लिंग करते देखती हूँ तो मुझे सिहरन-सी होती है और खुद भी डांस करने की प्रेरणा मिलती है। इन डांसरों का अपने शरीर के अंगों पर गज़ब का नियंत्रण होता है, वे इतनी रवानगी और उमंग के साथ डांस करते हैं कि तुमको देखने में वह बहुत ही आसान-सा लगने लगता है। स्ट्रीट डांसर के स्टेज नेम (वह नाम जिससे वे बतौर डांसर जाने जाते हैं) उनके व्यक्तित्व की झलक देते हैं। उनके हावभाव, लोच, शोखी और स्वैग उनके डांस में देखे जा सकते हैं।

विविध कलाओं का कल्चर

आज भी सबसे बेहतरीन और प्रतिभाशाली हिप-हॉप डांसर गली-मोहल्लों में ही मिलते हैं। ऐसी कई गलियाँ हैं जिनको डांसर के नाचने और धूम मचाने के स्थायी अड्डों के रूप में जाना जाता है। ऐसी ज़्यादातर जगहों पर दीवारें ग्रेफिटी से भरी होती हैं। ग्रेफिटी (दीवार कला) हिप-हॉप कल्चर का ही एक हिस्सा है। हिप-हॉप के बारे जो बातें मुझे पसन्द हैं उनमें ग्रेफिटी भी एक है। ग्रेफिटी से हमारे आस-पास की दुनिया रोशन हो जाती है और रंगों से सरोबार हो बिलकुल जी उठती है।

ग्रेफिटी के अलावा स्केटिंग और बीएमएक्स फ्रीस्टाइलिंग भी हाल के सालों में हिप-हॉप के ज़रूरी हिस्से बनकर उभरे हैं। स्केटर उन लोगों को कहते हैं जो पहिए लगे बोर्ड चलाते हैं और आश्चर्यजनक छलाँगें लगाते हैं बिना अपने स्केट से उतरे। बीएमएक्स फ्रीस्टाइलिंग असल में बीएमएक्स साइकिल पर स्टंट दिखाने को कहते हैं। इसे भी एक खेल मान लिया गया है और यह भी अब हिप-हॉप कल्चर का हिस्सा है। हाल ही में प्यूमा ने एक वीडियो बनाया 'सुएड गली' जिसके बारे में यह कहा जा रहा है कि ये भारत का सबसे बड़ा स्ट्रीट कोलैबोरेशन है जिसमें भारत के चारों कोनों से आए (दिल्ली, मुम्बई, शिलाँग और मदुरई) 36 डांसर, 8 रैपर, और 7 कलाकार शामिल हैं। इनमें मुम्बई का समूह 'बीस्ट मोड', कुछ उन गिने-चुने

समूहों में से एक है जिसमें विभिन्न विधाओं के हिप-हॉप कलाकार शामिल हैं। जैसे - डांसर, रैपर, ग्रेफिटी कलाकार, डीजे, स्केटर और बीएमएक्स फ्रीस्टाइलर।

1960 के दशक से अब तक हिप-हॉप की दुनिया काफी विकसित हुई है और इस विकास में एक प्रमुख योगदान है यू ट्यूब और डांस के रियलिटी कार्यक्रमों का। इनसे दुनिया भर के कलाकारों को आपस में जुड़ने और एक-दूसरे से सीखने का मौका मिलता है। मिसाल के लिए, पिछले साल हमने एक लोकप्रिय कार्यक्रम 'डांस प्लस' सीज़न-3 में डिट्टो और फिक्शन जैसे अन्तर्राष्ट्रीय हिप-हॉप डांसर को देखा। मुझे इन दो कलाकारों के बारे में पहली बार तभी पता चला।

यह सही है कि ये सभी विधाएँ हिप-हॉप कल्चर के हिस्से हैं लेकिन ये अपने आप में स्वतंत्र कला विधाएँ भी हैं। कोई चाहे तो 'घूमर' जैसे गाने पर भी हिप-हॉप कर सकता है जिसे बगैर रैपिंग या डीजे के भी हिप-हॉप ही माना जाता है। कोई चाहे तो 'रंगबती' जैसे लोकगीत में भी बगैर डीजे या किसी डांसर के भी रैप कर सकता है और फिर भी यह हिप-हॉप कल्चर का ही एक हिस्सा होगा। यह ऐसा है जैसे कई अलग-अलग व्यक्तिगत पहचानों की मदद से एक बड़े परिवार की पहचान बनाई गई हो और मुझे लगता है शायद यही बात हिप-हॉप को खूबसूरत बनाती है।

अनुवाद: लोकेश मालती प्रकाश

नीना की नानी और नानी की नीना की उम्र

चित्र: कनक शशि

नीना ने नाव में बैठकर अपनी नानी से पूछा, "नानी आपकी क्या उम्र है?"

नीना की नानी ने कहा, "उम्र तो मुझे याद नहीं है, मगर जब मेरा पहला बच्चा हुआ तब मैं 19 साल की थी। फिर हर चौथे साल मैंने एक बच्चे को जन्म दिया। इस तरह मेरे कुल 6 बच्चे-बच्चियाँ हैं। आखिरी बच्ची, तुम्हारी मम्मी, उनकी उम्र अभी 37 साल है। अब तुम ही हिसाब लगाकर बताओ मेरी उम्र कितनी है?"

नीना जोड़-घटाव करते-करते उलझ गई और नानी नाव में सो गई। जोड़-घटाव करने के बाद नाव में बैठी नीना ने नानी को नींद से जगाकर बोला, "नानी पता लग गया - आपकी उम्र मेरी उम्र से चार गुना अधिक है।"

अब भई तुम बताओ कि नीना की उम्र क्या है, और नानी की क्या है?

कितने सिक्के

एना ने मेज़ पर एक रुपए के कुछ सिक्के रखे थे जिनमें से आधे सिक्कों का चित वाला भाग ऊपर था। जब उसने दो सिक्कों को पलट दिया तो एक तिहाई सिक्कों का चित वाला भाग ऊपर की ओर था। क्या तुम बता सकते हो कि एना ने मेज़ पर कुल कितने सिक्के रखे थे?

बिनिया

शशि सबलोक
चित्र: प्रशान्त सोनी

स्कूल से आकर आज बिनिया ने न रोज़ की तरह बैग एक तरफ पटका, न "क्या बनाया है" कि ज़ोर की टेर लगाई। उसने कपड़े बदले और सीधा बगीचे में जा बैठी। आम के पेड़ की छाँव में। ऊपर से गौरैया की चीं..चीं, कौए की काँव-काँव सुनाई दे रही थी। बीच-बीच में कोयल की कुह-कुह भी कानों में पड़ जाती। गिरगिट, चींटे, मकोड़े, मकड़ियाँ सभी थे। अपने-अपने कामों में लगे हुए। चार दिन पहले बोए धनिए से छोटे-छोटे पौधे फूट रहे थे। गुलाब की कलियाँ कल से ज़्यादा खिली लग रही थीं। गेंदे कल से ज़्यादा मुरझाए थे। जब-जब हवा चलती तो पेड़ से पत्ते झरने लगते। कोई और रोज़ होता तो बिनिया इन सबके कामों में ज़रूर दखल देती। पर आज वो चुपचाप बैठी थी। सबको देखती। ऐसे देखती जैसे पहली बार देख रही हो। ऐसे सुनती जैसे पहली बार सुन रही हो। थोड़ी देर इन्तज़ार करने के बाद अम्मा दोनों का खाना लेकर वहीं आ गई। आम की छाँव में। सबके बीच।

"ये साँप क्यों सूँघा हुआ है हमारी बिटिया को आज?" अम्मा मुस्कुराते हुए बोलीं। कोई और दिन होता तो बिनिया ज़रूर पूछती "ये खाने के बीच साँप कहाँ से आ टपका?" पर आज रोज़ जैसा दिन नहीं था। बिनिया चुपचाप खाने लगी। नन्ही फुदकी मधुमालती के फूलों में अपनी पैनी चोंच घुसाकर रस पी रही थी। गौरैया पेड़ से उतर चारदीवारी पर बैठी थी। कभी दाना खाती, कभी पानी पीती। इन सब के बीच बिनिया चुपचाप बैठी थी।

"सभी का लंच टाइम चल रहा है। है ना बिनिया?" हमेशा बोलने वाली बिनिया की चुप्पी माँ को अखर रही थी। इतने में आम की छाल से उतरते मकोड़ों की कतार को देख बिनिया बोली "अम्मा, मकोड़े की भी क्या आँखें होती हैं?"

"हाँ। होती तो हैं। पर खाने की चीज़ों का पता वे सूँघकर लगाते हैं। सूँघने से पता चल जाता है कि खाना कहाँ है और वे झट वहाँ पहुँच जाते हैं। और औरों को भी इसकी खबर कर देते हैं। साँप भी आँख से नहीं देखता। हमारे चलने से ज़मीन काँपती है उसी से पता करता है कि कोई आ रहा है।"

"तो अम्मा क्या सिया भी ऐसा ही करती है?"

"कौन सिया?"

"आज मैं स्कूल से आ रही थी तो मुझे सिया मिली। उसके हाथ में एक छड़ी थी। वो उसे इधर-उधर हिलाती और चलती जा रही थी। मैं उसके साथ-साथ चलने लगी। उसे दिखाई नहीं देता। अम्मा मुझे बहुत डर लगा। रास्ते में कितनी गाड़ियाँ चलती हैं।"

"हम थोड़ी दूर तक साथ चलते रहे। वो अपने स्कूल के बारे में बता रही थी। अपनी किताबों के बारे में। अपने दोस्तों के बारे में। अपनी टीचरों के बारे में। अपने भाई-बहनों के बारे में। फिर उसके घर का मोड़ आ गया। मैंने कहा मैं साथ चलती हूँ। तो वो बोली मैं तो रोज़ ही अकेले आती-जाती हूँ। अपन अब रोज़ मिलेंगे। और वो चली गई।"

बिनिया की आवाज़ में अब भी डर काँप रहा था।

"देखना सिर्फ आँख से ही नहीं होता। सूँघकर, छूकर, सुनकर भी देखना होता है। और जब आँख नहीं देख पाती तो नाक, कान, छुअन पर देखने की ज़िम्मेदारी ज़्यादा आ जाती है। तुम सिया को अपने बगीचे में लाना। देखना बगीचे से उसकी दोस्ती, तुम्हारी दोस्ती से कम नहीं होगी।"

अचानक फुदकी उछली। फूलों का रस पीते-पीते वो इतना नीचे आ गई थी कि पता ही न चला उसके बिलकुल पास बिल्ली बैठी दूध सुड़क रही थी। पर बिल्ली के सर उठाने से पहले वो उड़ गई। बिनिया सब कुछ ध्यान से देख रही थी। और फिर खाली बरतन उठाकर अन्दर चली गई।

अगले दिन स्कूल छूटते ही बिनिया भागी। उसे दूर से ही सिया पेड़ के नीचे खड़ी दिख गई थी। सिया के साथ आज उसकी क्लास का आमिर भी था। दौड़ती हुई सिया पेड़ के पास पहुँची। और तीनों चल दिए। आज बिनिया का मुँह बन्द होने का नाम नहीं ले रहा था। "मालूम है गौरैया दाना खाने से पहले इधर देखती है फिर उधर। अरे भाई दाना खा रहे हो कि सड़क पार कर रहे हो.... अब तो गेंदे का मौसम गया समझो... फूल कैसे मुरझा गए हैं.... पर गुलमोहर ने बोरिया-बिस्तर बाँधकर आने की तैयारी कर ली है। अमलतास ने भी। सेमल, पलाश टाटा बायबाय कर रहे हैं। और वो फुदकी... रस पीते-पीते एकदम नीचे आ गई थी। और नीचे पता है शेर की मौसी बैठी दूध पी रही थी..." कहते हुए बिनिया ने बैग में से पलाश, सेमल के कुछ फूल सिया और आमिर के हाथों में रख दिए।

"कितने सुन्दर और मखमली हैं।" सिया बोली।

"हाँ। पलाश के फूल से तो मैं रंग बनाती हूँ..."

बिनिया की बात को बीच में काटते हुए आमिर बोल पड़ा, "अरे सुन, अपनी फुदकी से कह देना कि ध्यान रखे, कहीं रस समेत बिल्ली के पेट में न चली जाए।" सेमल के फूलों को वो इस अन्दाज़ से हाथों से रगड़ता हुआ बोला कि तीनों ज़ोर-से हँस दिए।

सेंटर कोर्ट पर जुलाई का वो रविवार

रुद्राशीष चक्रवर्ती

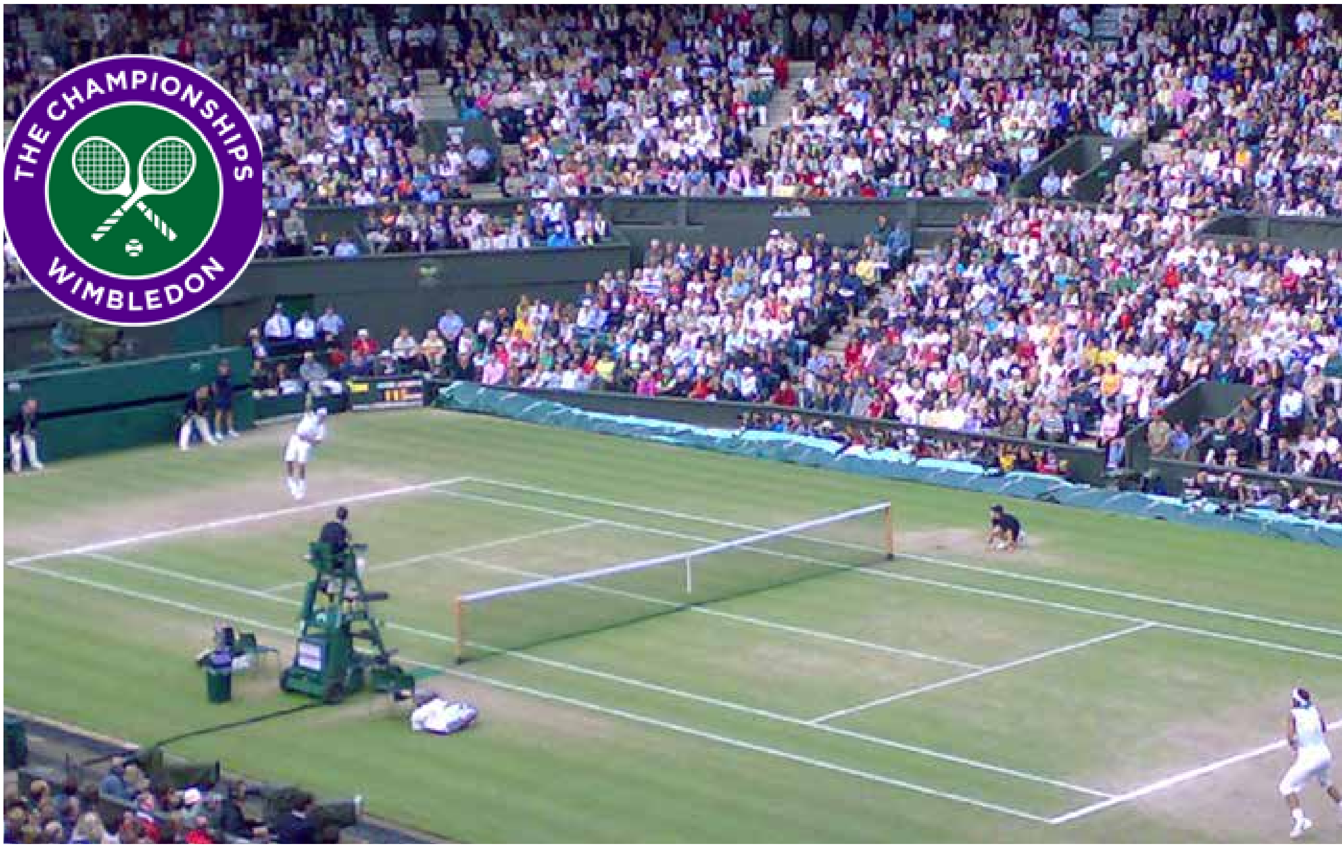

ये जुलाई 2008 की बात है। सोमवार का दिन था और कोलकाता में बादल छाए हुए थे। मैं भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई) की मुख्य इमारत के भीतर अपनी उम्र के दूसरे लड़के-लड़कियों के साथ लाइन में खड़ा था। कॉलेज की मेरी आखिरी सेमेस्टर परीक्षाएँ कुछ पहले खत्म हो चुकी थीं। रिज़ल्ट आने में अभी एक महीने का वक्त था और मेरे पास काफी सारा खाली समय था। इसलिए एक दिन पहले जब मेरे उस समय के सबसे गहरे मित्र ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसके साथ आईएसआई कैम्पस चलना चाहूँगा, जहाँ उसे किसी पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स का एडमिशन फॉर्म लेने जाना था, तो मैंने झट से हाँ कह दिया था।

लाइन काफी लम्बी थी और फॉर्म बड़ी धीमी रफ्तार से मिल रहे थे। मुझे बोरियत होने लगी क्योंकि वहाँ कुछ भी मज़ेदार करने को नहीं था। मुझे लगा था कि वहाँ काफी मज़ा आएगा और इसी उम्मीद से मैं अपने दोस्त के साथ वहाँ पहुँचने के लिए सुबह बस में चढ़ा था। हम दोनों एक दूसरे से जितनी बातें कर सकते थे, कर चुके थे और अब लाइन में चुपचाप खड़े थे और प्रार्थना कर रहे थे कि हमारी बारी जल्दी आ जाए। हालाँकि ऐसा होने के आसार नहीं थे क्योंकि हमसे आगे बहुत लोग खड़े थे।

अचानक मेरे ठीक पीछे खड़े दो लड़कों के बीच हो रही बातचीत मुझे सुनाई पड़ी "कल रात क्या मैच हुआ यार! मतलब मैंने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि फेडरर मैच को पाँचवें सैट तक ले जाएगा, वो भी चौथे सैट में दो मैच पॉइंट बचाने के बाद! मैंने इस तरह की टेनिस कभी नहीं देखी। किसी को तो जीतना ही था सो नडाल जीत गया लेकिन दोनों ने क्या गज़ब का खेल दिखाया!"

मेरे ही जैसे टेनिस के इन दो दीवानों से जल्दी से कुछ सवाल-जवाब करके मुझे वो सारी जानकारी मिल गई जो मुझे उस समय चाहिए थी। इसके बाद बाकी का दिन मैं खुद को लगातार कोसता रहा कि क्यों, आखिर क्यों मैंने 6 जुलाई, 2008 की उस पिछली रात को वो बेवकूफी की!

आखिर हुआ क्या था? दरअसल पिछली रात को सेंटर कोर्ट, लंदन में 2008 की विम्बलडन प्रतियोगिता, जो सम्भवतः टेनिस की दुनिया की

सबसे प्रतिष्ठित प्रतियोगिता है, के पुरुष सिंगल्स (एकल) खिताब का फाइनल मैच हुआ था। ये मैच दो बार बारिश की वजह से खलल पड़ने के कारण 7 घण्टे 15 मिनिट तक चला था। जब मैच खत्म हुआ तो ब्रिटिश समर टाइम के अनुसार रात के सवा नौ बज चुके थे और लगभग अँधेरा हो गया था। हकीकत में खेल 4 घण्टे 48 मिनिट तक हुआ था और खेल के समय के हिसाब से ये विम्बलडन के इतिहास का सबसे लम्बा सिंगल्स फाइनल था। प्रख्यात अमरीकी टेनिस खिलाड़ी जॉन मैकेनरो ने इसे उनके द्वारा देखा गया सर्वश्रेष्ठ मैच बताया। और उन अधिकांश लोगों ने, जिन्होंने इस मैच को लाइव देखा था – चाहे वे जो उस समय कोर्ट में मौजूद थे या वे जिन्होंने टीवी पर इसे देखा था – बाद में मैकेनरो की बात का समर्थन किया।

और अगर मैंने वो बेवकूफी भरा निर्णय न लिया होता तो मैं भी उन लोगों में से एक होता। हालाँकि जिस समय मैंने वो निर्णय लिया उस समय वो बिलकुल सही निर्णय लग रहा था।

मैं स्पष्ट कर दूँ कि मैं हमेशा ही, लगभग हमेशा ही, रोजर फेडरर का ज़बरदस्त समर्थक रहा हूँ। सिर्फ एक बार छोड़कर जब 2001 में 19 साल की उम्र में उन्होंने मेरे उस समय के टेनिस हीरो, पीट सैम्प्रास को विम्बलडन के इसी सेंटर कोर्ट पर ऐसे ही पाँच सेट के मुकाबले में हरा दिया था। ग्रास कोर्ट (विम्बलडन टेनिस की एकमात्र बड़ी प्रतियोगिता है जो अभी भी घास पर खेली जाती है) के तथाकथित "भगवान", सैम्प्रास, को विम्बलडन में पाँच सालों और 32 मैचों के बाद हराने वाले फेडरर पहले खिलाड़ी थे। लेकिन 2008 में मेरे जैसे दुनियाभर के तमाम फेडरर समर्थकों को एक कट्टर दुश्मन मिल गया था, जिसका नाम था राफेल नडाल।

साल 2004 में 17 साल के नए-नवेले स्पैनिश खिलाड़ी नडाल ने उस समय के दुनिया के नम्बर एक टेनिस खिलाड़ी फेडरर को सीधे सेटों में हरा दिया था। ये इन दोनों के बीच हुआ पहला मुकाबला था। उस समय स्विस उस्ताद फेडरर टेनिस की दुनिया में लगभग अजेय हो चुके थे। और 2004 के बाद भी काफी सालों तक वो अजेय ही रहे सिर्फ उस समय को छोड़कर जब उनका सामना उनके इस स्पैनिश प्रतिद्वन्द्वी से होता था।

इन दोनों खिलाड़ियों की टेनिस खेलने की शैलियाँ एक दूसरे से पूरी तरह जुदा हैं। फेडरर की प्रतिभा छिपी है उनकी कलात्मक और आकर्षक शैली में। फेडरर को खेलते देख अकसर तो ये भी नहीं लगता कि वो पॉइंट जीतने की कोशिश कर रहे हों, बल्कि ऐसा लगता है कि बस अच्छे से खेलने के लिए खेल रहे हों। पर हकीकत में इसी सहजता के साथ, और बहुत ज़्यादा 'कोशिश' के बिना वो ऐसा खेल जाते हैं कि उनके प्रतिद्वन्दियों के पास उसका कोई जवाब नहीं होता। लोगों का कहना है कि इस स्विस खिलाड़ी को खेलते देखना ऐसा लगता मानो कोई कला की प्रस्तुति देख रहे हों। दूसरी तरफ, नडाल के लिए तो हर पॉइंट जैसे ज़िन्दगी और मौत का सवाल होता है। और वो इसी अन्दाज़ में खेलते हैं कि अगर पॉइंट नहीं बन पाया तो मानो दुनिया ही खत्म हो जाएगी। पूरे मैच के दौरान जिस आक्रामकता और जुनून के साथ नडाल बॉल का पीछा करते हुए कोर्ट के एक छोर से दूसरे छोर तक भागते रहते हैं, उसे देखकर न सिर्फ आप हक्के-बक्के रह जाते हैं बल्कि कभी-कभी तो सहम भी जाते हैं। और यही सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि ये आदमी इतना जोश, इतना जुनून लाता कहाँ से है। नडाल टेनिस के अखाड़े के बेजोड़ योद्धा हैं।

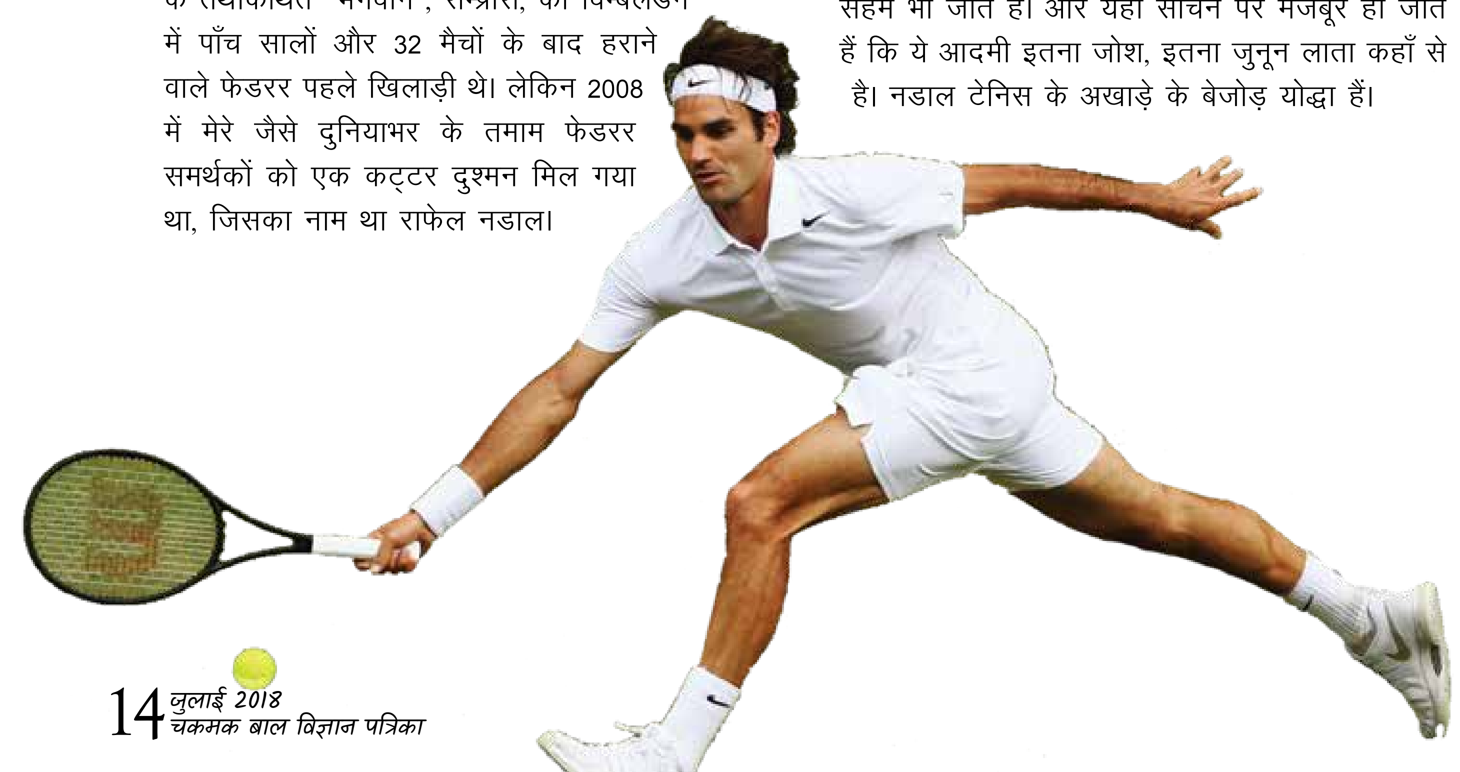

फेडरर ने नडाल को हराकर ही 2006 और 2007 की विम्बलडन प्रतियोगिताएँ जीती थीं और इन जीतों ने उन्हें निर्विवाद रूप से ग्रास कोर्ट का नया भगवान बना दिया था। लेकिन नडाल ने भी 2006 में रोम में खेले गए इटैलियन ओपन प्रतियोगिता के फाइनल में 5 घण्टे 5 मिनिट चले एक और प्रसिद्ध मुकाबले में फेडरर को पाँच सेटों में हराया था। इसके अलावा नडाल ने फेडरर को 2006 से 2008 तक लगातार तीन साल फ्रेंच ओपन के फाइनल में हराया था। बल्कि 2008 फ्रेंच ओपन का फाइनल तो नडाल ने सीधे सेटों में 6-1, 6-3, 6-0 से जीत लिया था। नडाल को ये एकतरफा जीत 8 जून को मिली थी, यानी जुलाई के उस निर्णायक रविवार से बमुश्किल एक महीना पहले जब यही दोनों दिग्गज लंदन में एक दूसरे से भिड़ने वाले थे।

इसलिए 6 जुलाई, 2008 को जब सेंटर कोर्ट पर होने वाले उस फाइनल के शुरू होने का समय आया तो कम से कम मुझे तो फेडरर की जीत की कोई बहुत उम्मीद नहीं थी। हालाँकि मैं भी इतना तो मान रहा था कि ये विम्बलडन था, जहाँ पिछले पाँच सालों में कोई भी फेडरर की बादशाहत को चुनौती नहीं दे पाया था।

बारिश की वजह से खेल लगभग 35 मिनिट की देरी से शुरू हुआ। लेकिन खेल शुरू होने के बाद मेरी आशंकाएँ सही साबित होती दिखीं, और वो भी बहुत दुखद तरीके से। मैच को बमुश्किल दो घण्टे ही हुए थे और नडाल ने 6-4, 6-4 से पहले दो सेट जीत लिए थे। फेडरर को एक ऐसे कोर्ट पर हर गुज़रते मिनिट के साथ पिछड़ते हुए देखना मेरे लिए बहुत कठिन था जो उनके लिए लगभग घर जैसा हो चुका था। यानी फेडरर 'अपने ही घर' में हार की तरफ बढ़ रहे थे। पर नडाल को तो 'किंग ऑफ क्ले' (मिट्टी के कोर्ट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी) माना जाता था, तो फिर सेंटर कोर्ट की घास पर वो फेडरर को कैसे पछाड़ सकते थे?

फिर बारिश के कारण खेल को दूसरी बार रोका गया। तब तीसरा सेट चल रहा था और फेडरर उसमें 5-4 से आगे थे। पर ये रुकावट कुछ ज़्यादा ही लम्बी खिंच गई और खेल लगभग डेढ़ घण्टे तक रुका रहा। यहाँ कोलकाता में रात के बारह बजने वाले थे। मैं टीवी के सामने अकेला, उदास बैठा हुआ था। मेरा एक मन चाह रहा था कि लंदन में जल्दी से जल्दी बारिश रुक जाए और मौसम साफ हो जाए, जबकि एक मन इसका बिलकुल उलटा चाह रहा था ताकि मुझे नडाल को विम्बलडन की ट्रॉफी उठाते न देखना पड़े। लेकिन ये लम्बा इन्तज़ार बहुत थकाऊ हो गया और मुझे लगा कि सबसे अच्छा होगा कि मैं टीवी बन्द करके सोने चला जाऊँ। मुझे यकीन था कि दो सेट से पिछड़ने के बाद फेडरर के पास मैच में वापसी करने का कोई मौका नहीं है क्योंकि मैच में वापसी का मतलब था उसे पाँचवे सेट तक ले जाना जिसकी आदत फेडरर को थी नहीं। दरअसल फेडरर को अपने प्रतिद्वन्दियों को तीन या चार सेटों में धराशायी करने में इतनी महारत हासिल थी कि मुझे रत्ती भर भी भरोसा नहीं था कि दो सेट आसानी से गँवा देने के बाद उनमें इतना माद्दा होगा कि वो मैच में वापसी कर सकें। हाँ नडाल को ज़रूर अपने हार न मानने वाले ज़िद्दी रवैये के लिए जाना जाता था, लेकिन मेरे जैसे फेडरर प्रेमियों के लिए दुर्भाग्य था कि अभी तो नडाल ही मैच में आगे थे।

आखिरकार मैंने टीवी बन्द कर दिया और अपने बेडरूम को चल दिया, ये सोचते हुए कि पता नहीं फेडरर का आगे का कैरियर कैसा रहेगा। उस वक्त मुझे ज़रा-सा भी एहसास नहीं था कि लंदन के उस सेंटर कोर्ट पर पूरी दुनिया के सामने अभी क्या 'खेल' होने वाला था। मेरे सोने के थोड़े ही समय बाद ही वहाँ असली लड़ाई शुरू हुई।

तीसरा और चौथा, दोनों ही सेट टाइब्रेकर तक गए। दोनों ही सेट फेडरर ने जीते और स्कोर रहा 7-6 (टाइब्रेकर में 7-5), 7-6 (टाइब्रेकर में 10-8)। इस दौरान चौथे सेट में तो फेडरर ने दो चैम्पियनशिप पॉइंट तक बचाए जो इससे पहले उन्हें विम्बलडन में कभी नहीं करना पड़ा था। दोनों ही खिलाड़ी अपने-अपने खेल को एक अलग ही स्तर पर ले गए। दर्शक जहाँ उनका खेल देखकर मंत्रमुग्ध थे, वहीं टीवी कॉमेन्टेटरों को समझ ही

नहीं आ रहा था कि जो खेल वो अपनी आँखों के सामने देख रहे थे उसे किन शब्दों में दर्शकों को बयान करें। चौथे सेट के टाइब्रेकर में एक के बाद एक, दो ऐसे पॉइंट हुए जब पहले नडाल और फिर फेडरर ने पॉइंट जिताने वाले ऐसे अद्भुत शॉट लगाए कि एक कॉमेन्टेटर ने कहा कि ये उस साल की पूरी प्रतियोगिता के दो सर्वश्रेष्ठ शॉट थे।

तो आखिरकार मैच पाँचवे सेट में पहुँच ही गया।

पर इस सेट में फेडरर नडाल की असाधारण ऊर्जा और इच्छाशक्ति का मुकाबला नहीं कर पाए। ये स्पैनिश खिलाड़ी मानो तय कर चुका था कि विम्बलडन ट्रॉफी को पहली बार उठाने का ये मौका वो किसी भी कीमत पर हाथ से जाने नहीं देगा। नडाल ने पाँचवा सेट 9-7 से जीतकर मैच अपने नाम कर लिया। निर्णायक चैम्पियनशिप पॉइंट पर जब फेडरर के फोरहैंड से निकली बॉल नेट में ही उलझ गई, नडाल अत्यधिक खुशी और राहत के भाव से अपने हाथ-पाँव फैलाए पीठ के बल कोर्ट पर गिर पड़े।

पुरस्कार वितरण समारोह में अपनी उपविजेता वाली ट्रॉफी को लेते हुए फेडरर ने कहा "मैं इस हार से निराश हूँ और टूट गया हूँ। नडाल ने बहुत बढ़िया मैच खेला। मैं जानता हूँ कि ये दर्शकों के लिए और हम खिलाड़ियों के लिए एक ज़बरदस्त मैच था। लेकिन अब मैच खत्म हो चुका है और मुझे इस हार और थकान से उबरने में कुछ समय लगेगा।" नडाल भी टेनिस इतिहास के सर्वश्रेष्ठ मैचों में से एक में खेलकर विम्बलडन ट्रॉफी को पहली मर्तबा हाथ में उठाने के महत्व को महसूस कर रहे थे। उन्होंने कहा "सबसे महत्वपूर्ण बात तो है खिताब जीतना। फिर ये कि आपने दुनिया के नम्बर 1 खिलाड़ी को हराकर खिताब जीता है और वो भी ऐसा खिलाड़ी जो टेनिस इतिहास का महानतम खिलाड़ी है या उसके नज़दीक है। और तीसरी बात कि मैच इतना रोमांचक रहा। निश्चित ही ये मेरे जीवन के सबसे गहरे एहसासों में से एक है।"

इसके बाद दोनों खिलाड़ियों ने और भी विम्बलडन खिताब जीते। नडाल ने 2010 में और फेडरर ने 2009, 2012 और 2017 में। आज ये दोनों टेनिस इतिहास के दो महानतम खिलाड़ी माने जाते हैं, और ज़्यादातर विशेषज्ञ फेडरर को आज तक का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी मानते हैं। लेकिन जुलाई, 2008 के उस अविस्मरणीय रविवार को लंदन के सेंटर कोर्ट पर जो कुछ भी हुआ उसके बाद इस बात का अन्दाज़ा तो हर कोई वैसे भी लगा सकता था कि कुछ ही समय में ये दोनों खिलाड़ी टेनिस की महानतम शख्सियतों में अधिकारपूर्वक अपनी जगह बना लेंगे।

अनुवाद : भरत त्रिपाठी

शाम का सुहाना मौसम था। उस दिन घर में मैं अकेली थी, मैंने कुर्सी उठाई और मेज़ के पास वाली खिड़की पर जाकर बैठ गई। मेज़ पर रखा हुआ शीशे का चौकोर-सा डिब्बा चमक रहा था। मैंने खिड़की खोली। खिड़की के खुलते ही हवा अपनी तेज़-तर्रार अदाओं के साथ कमरे में दाखिल होने लगी। खिड़की के शीशे पर आती मछली के डिब्बे की चमक ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। मैं उसे निहारने लगी, उसमें रंग-बिरंगी मछलियाँ तैर रहीं थीं। और एक मैं थी कि बस उन्हें निहारे ही जा रही थी। अन्दर रखीं मछलियाँ कभी एक-दूसरे के आगे आतीं तो कभी पीछे, ऐसा लग रहा था मानो मछलियाँ रेस लगा रही हो। उसमें मछलियों के साथ बुलबुले भी दिखाई दे रहे थे। हवा अपने आप में ज़ोरों-शोरों से चल रही थी। एक पल के लिए मैंने सोचा कि लगता है मछलियों को गर्मी लग रही है। मेरे दिमाग में एक आईडिया आया, क्यों न मैं थोड़ी देर के लिए मछलियों को खोल दूँ। आखिरकार उन्हें भी तो अच्छी हवा खाने का हक है। यह सोच मैंने उन्हें खोल दिया और वो सब मुझे धन्यवाद देते हुए खिड़की से बाहर हवा में उड़ने लगी और सामने की नदी में चली गईं।

खिड़की, हवा, मछली और मैं

ज़ेबा खातून

चित्र: शुभम लखेरा

बैंगन आया, भिण्डी आई

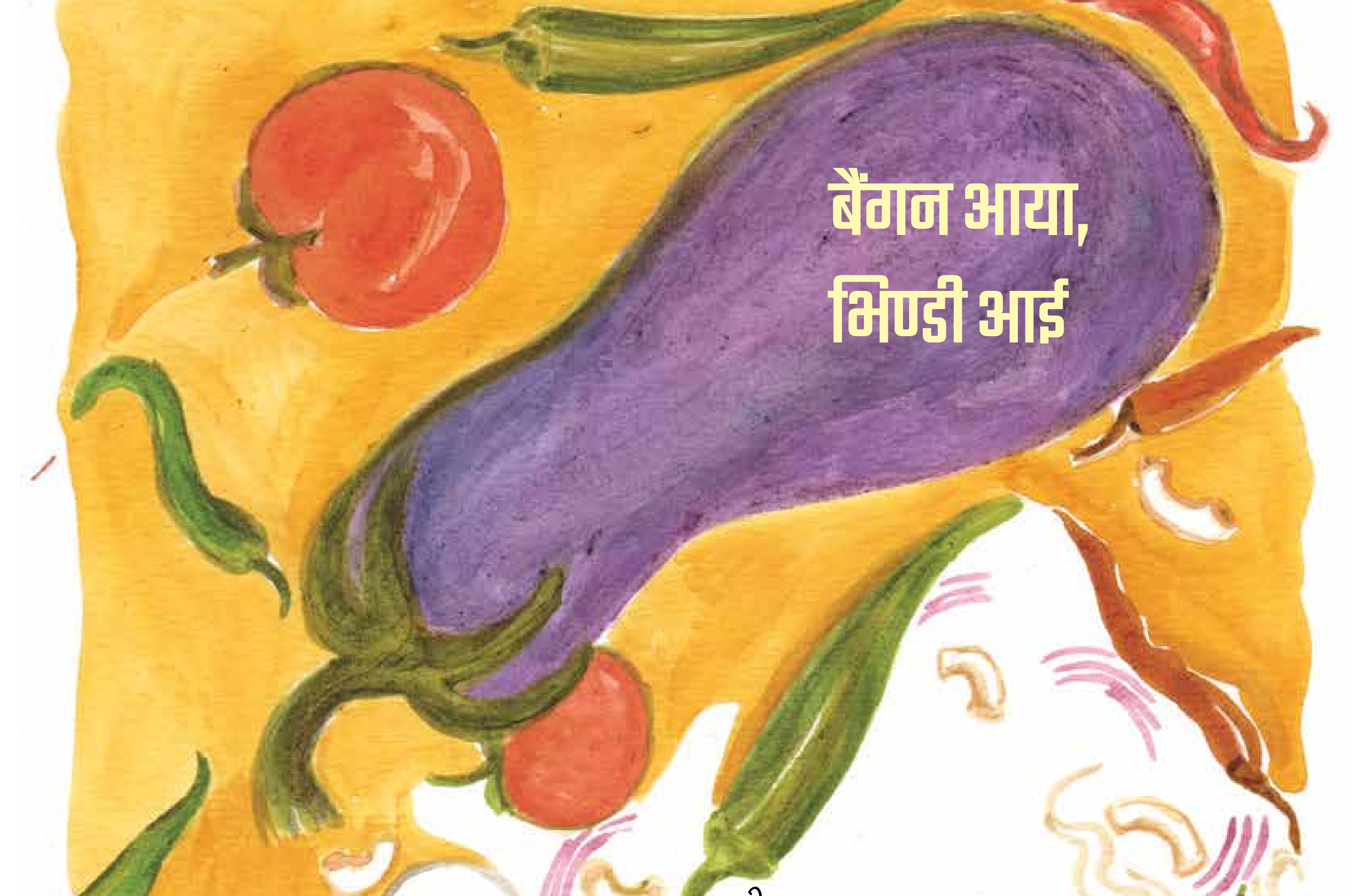

1

चाप भी आई
भिण्डी भी आई
मम्मी साथ में जीरा लाई
जीरे को कुकर में डाला
कुकर बेचारे को मार ही डाला
चाप को डाला
भिण्डी को डाला
टमाटर बेचारा भूख का मारा
बाद में फिर सबको निकाला
सभी चीज़ों को छौंक डाला
सारी सब्जियों को मार ही डाला
बनाकर उन्हें खा डाला।

- दीपिका

2

बैंगन आया, भिण्डी आई
साथ में 2-4 अण्डे लाई
अण्डे को जब फट से फोड़ा
बैंगन भीगा, भिण्डी भीगी
बाद में मैगी लहराती आई
रस्सी बनकर मसाले लाई
मसाले पाकर भिण्डी खिलखिलाई
भिण्डी को देख मैगी गुस्साई
मैगी का गुस्सा मसाले को न भाया
उसने फिर मिर्ची को बुलाया
मिर्ची हुई गुस्से में लाल
नाक में घुस निकली फुस-फुस।

- कीर्ति

दीपिका और कीर्ति नई दिल्ली में रहती है।
अंकुर संस्था की नियमित रियाज़कर्ता है।

चित्र: कनक शशि
इस चित्र में इस्तेमाल किये गए रंग, आसपास के फूल, पत्तियों और फलों से बनाए गए है।

पाचन!

उमा सुधीर

मैंने अपने पिछले लेख में पुराने दोस्त टट्टी की बातें की थीं। दोस्त इसलिए कि हम उससे बहुत कुछ सीख सकते हैं और पुराना इसलिए कि हम पत्थर बन चुके टट्टी के जीवाश्म से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। फिर मैं सोचने लगी कि मल बनता कैसे है? उसकी बात भी करनी चाहिए, नहीं? टट्टी को हम पाचन क्रिया का अन्तिम परिणाम मान सकते हैं यानी वह पदार्थ जो पचकर शरीर में सोखा नहीं जाता। साथ में कुछ पदार्थ और होता है जिसे शरीर बाहर फेंकना चाहता है। इसे समझने के लिए हमें पाचन की बात करनी होगी।

मुझे हमेशा लगता रहा है कि स्कूल-कॉलेजों में पाचन की बात बहुत उबाऊ ढंग से पढ़ाई जाती है।

मेरी रुचि इस विषय में तब पैदा हुई जब मैंने पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रम के बाहर मुँह मारना शुरू किया। हमें इन बातों को लेकर एक अलग नज़रिए की ज़रूरत है ताकि हम सवालों को नए ढंग से देख सकें। मेरे ख्याल से सीधा-सा सवाल यह है कि कैसे अलग-अलग जीव यह पक्का करते हैं कि उन्हें ज़रूरी पोषण मिल जाए। मुझे उम्मीद है कि इस लेख के अन्त तक मैं तुम्हारी रुचि भी इस नज़रिए में जगा पाऊँगी।

इस बार मैं कुछ दिलचस्प जन्तुओं की पाचन क्रिया के बारे में बताऊँगी। यहाँ यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि जन्तु मनमर्ज़ी से कुछ भी नहीं खा सकते। उनकी शरीर रचना, शरीर की क्रियाएँ कुछ सीमाएँ बाँध देती हैं। (क्या आपको पता था कि चॉकलेट खा लें तो कुत्तों का पेट खराब हो जाता है?) खैर, धरती पर जीवों की लाखों प्रजातियाँ हैं जिनके पास पोषण प्राप्त करने की समस्या के कुछ अलग-अलग समाधान भी हैं। मैं यहाँ सिर्फ उन जन्तुओं की बात करूँगी जो घास-पत्तियाँ खाते हैं।

देखा जाए तो ज़्यादातर जानवरों के लिए घास-पत्तियाँ पोषण का निहायत घटिया स्रोत है। ये पत्तियों और तनों को पचा जो नहीं पाते हैं। पर्याप्त ऊर्जा, प्रोटीन, विटामिन वगैरह हासिल करने के लिए फल या मांस खाते हैं। फिर भी तरह-तरह की पत्तियाँ खाने वाले जीव-जन्तु खुशी-खुशी जीते हैं और खूब फलते-फूलते हैं। तो सवाल उठता है कि पोषण के इतने घटिया आधार पर ये कैसे ज़िन्दा रह पाते हैं? मैं यहाँ सिर्फ चार जन्तुओं की बात करूँगी। ये चारों अलग-अलग तरीके अपनाकर, अलग-अलग जुगाड़ करके काम चलाते हैं।

सबसे पहले हम हमारे मित्र गाय और घोड़े की बात करें जिन्हें बहुत पहले पालतू बनाया गया था। दिलचस्प बात यह है कि ये दोनों जो पत्तियाँ (अधिकतर घास) खाते हैं, उसे पचाने के लिए बैक्टीरिया की मदद लेते हैं। अन्तर यह है कि गाय ने इन बैक्टीरिया को अपनी आहार नली के शुरुआती हिस्से में पाला है तो घोड़े ने अन्त में। ये बैक्टीरिया पत्तियों में उपस्थित सेल्यूलोज़ पचाते हैं और उसे ऐसे पदार्थों में बदल देते हैं जिन्हें आँतों में सोखा जा सकता है। (हम सेल्यूलोज़ को नहीं पचा सकते और इसलिए पत्तियाँ खाकर जीवित नहीं रह सकते।) और तो और, जब पचा हुआ सेल्यूलोज़ गाय की आँत में जाता है तो उसके साथ कुछ बैक्टीरिया भी आँतों में चले जाते हैं। गाय उन्हें भी पचा डालती है (है ना, नाशुक्री)। घास से मिलने वाले कार्बोहाइड्रेट के साथ ये बैक्टीरिया गाय के लिए प्रोटीन का स्रोत होते हैं। लेकिन घोड़े की आँत में बैक्टीरिया अन्तिम हिस्से में होते हैं। भले ही घास पच जाती है और सेल्यूलोज़ से मिलने वाला पोषण घोड़े को मिल जाता है मगर बैक्टीरिया नहीं पच पाते हैं और घोड़े को उनसे प्रोटीन नहीं मिल पाता। इसीलिए घोड़े का काम सिर्फ घास खाकर नहीं चलता। हमें उन्हें चने वगैरह के रूप में प्रोटीन खिलाना पड़ता है। वैसे गाय की ज़रूरतें भी बैक्टीरिया के प्रोटीन से पूरी नहीं होती हैं। उन्हें प्रोटीन की कमी न हो इसलिए हम उन्हें बरसीम का पौधा, खली और चुनी खिलाते हैं। इन दोनों जानवरों की आहार नाल बहुत लम्बी होती है ताकि वे पत्तियों से अधिकतम पोषण निचोड़ सकें।

अब पाण्डा नाम के जीव को देखो। पाण्डा का विकास मांसाहारी पूर्वजों से हुआ है और उसे लम्बी आहार नाल का तोहफा नहीं मिला है। और तो और, उसकी आहार नाल में बैक्टीरिया भी नहीं बसते जो बाँस की कोपलों और पत्तियों को पचाने में उसकी मदद करें। दिक्कत यह है कि पाण्डा यही चीज़ें खाता है। फिर वह जीवित कैसे रहता है? वह अपनी उदर-पूर्ति के लिए हर समय खाता रहता है। जागते हुए वह अधिकांश समय खाता रहता है और खूब खाता है ताकि बाँस में उपस्थित अत्यल्प पोषण को निचोड़ सके।

मगर मेरा प्रिय जीव तो खरगोश है। वह अपनी विष्ठा खाता है (और यही मेरे पिछले लेख और इस लेख की कड़ी है)। सवाल उठता है कि खरगोश अपनी विष्ठा क्यों खाता है? यदि

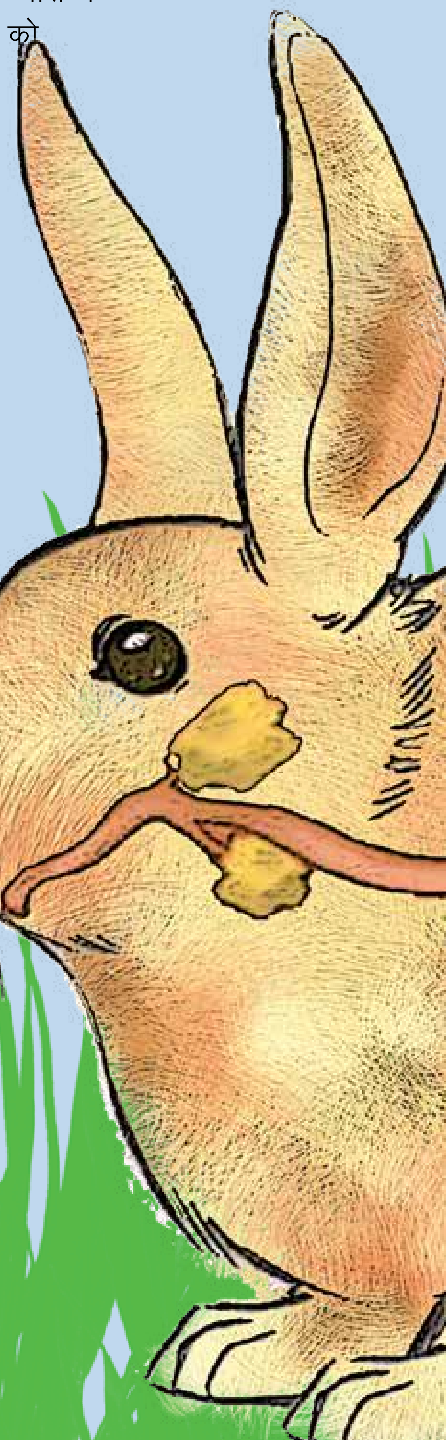

खरगोश की विष्ठा

पहली बार के पाचन से निकली गीली विष्ठा

दूसरी बार के सूखे सख्त गोले

तुमने खरगोश पाला है तो तुम्हें पता होगा कि हम उन्हें ताज़ी-हरी पत्तियाँ और फल-सब्ज़ियों के छिलके खिलाते हैं। घोड़े के समान, खरगोश की आहार नाल में भी सेल्यूलोज़ को पचाने वाले बैक्टीरिया अन्तिम हिस्से में पाए जाते हैं। आहार नाल के पिछले हिस्से में ये बैक्टीरिया अपेंडिक्स में पाए जाते हैं (मनुष्यों के विपरीत खरगोश का अपेंडिक्स सचमुच बहुत बड़ा होता है)। घोड़े के मल के समान खरगोश के मल में ऐसे काफी पोषक पदार्थ होते हैं जिन्हें पहली बार आँतों में सोखा ही नहीं जा सका था। लेकिन खरगोश में इस समस्या का समाधान हुआ है। वह अपनी विष्ठा खा लेता है ताकि 'भोजन' एक बार फिर आहार नाल से होकर गुज़रे ताकि पोषक पदार्थों को सोखने का एक और मौका मिल जाए। दूसरी बार जो विष्ठा निकलती है वह पहली बार की विष्ठा से थोड़ी अलग दिखती है और खरगोश इसे नहीं खाता।

तो इस समस्या का सामना इन्सान ही नहीं करते कि क्या खाएँ और कितना खाएँ। लेकिन हम विविध चीज़ें खा सकते हैं क्योंकि जो खाना हमसे कच्चा पचता नहीं, हम उन्हें पकाकर खा लेते हैं। इस कारण हमारे विपरीत जन्तुओं के सामने जीव वैज्ञानिक अड़चनें होती हैं कि वे क्या खाकर ज़िन्दा रह सकते हैं। हमारे लिए खानपान का मामला आदत का सवाल है, कि हम क्या खाने के आदी हैं, या हमारा धर्म या इलाका हमें क्या खाने की इजाज़त देता है या मुमानियत करता है। क्या हमें इन आदतों से छुटकारा पाकर तमाम नए-नए भोजन नहीं आज़माना चाहिए?

चक मक

अनुवादः सुशील जोशी

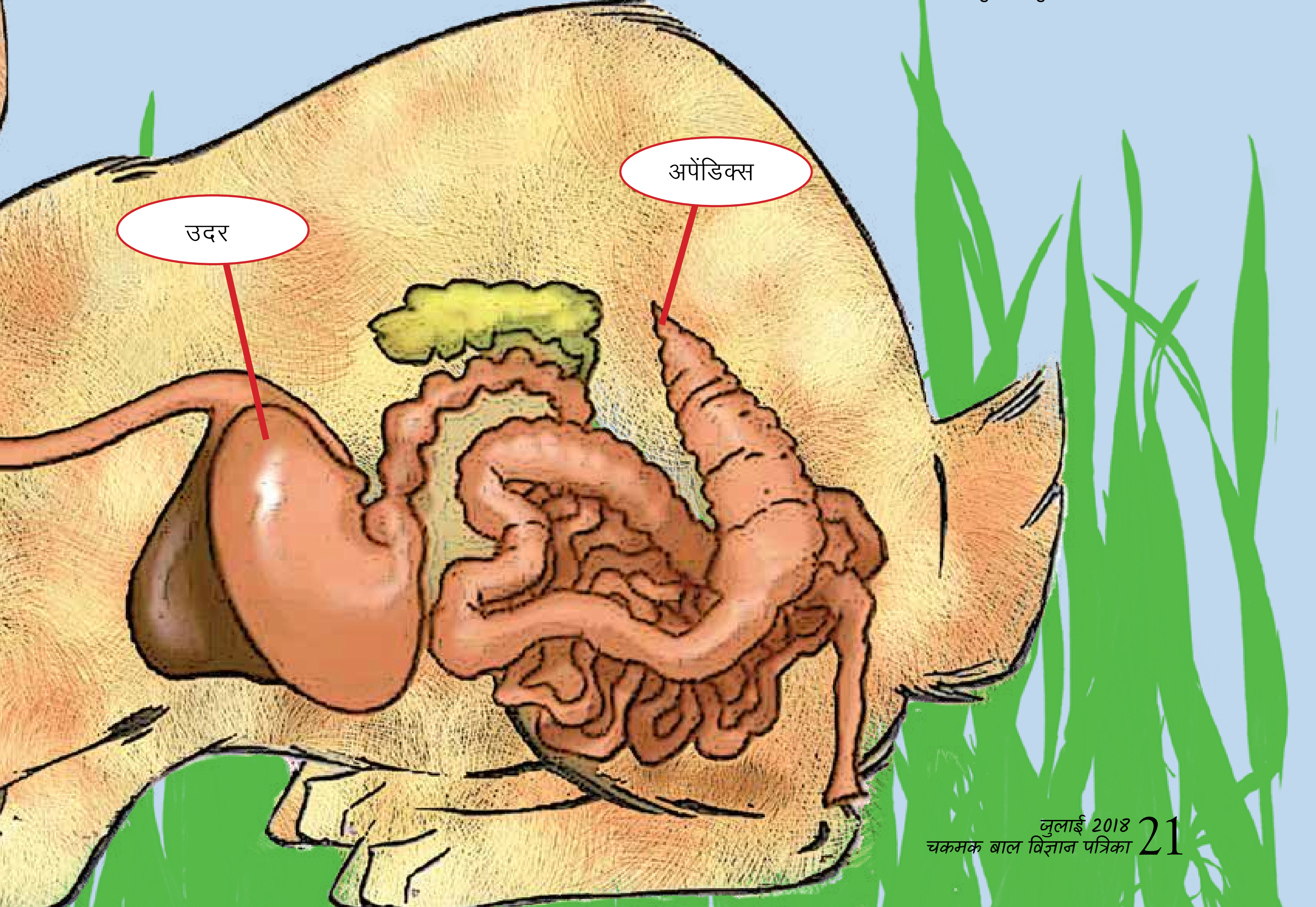

.....सबकी रातें आराम को हैं?

श्वेता नम्बियार
चित्र: निहारिका शेनॉय
अनुवाद: सुशील शुक्ल

माँ आज भी घर से बाहर है
पापा एक गहरी नींद में हैं

... कुत्ते की पहरेदारी है
बिल्ली यूँ झपकी लेती है
कि जैसे नींद की मारी है

दरवाज़े खुलकर झूल गए
पापा बन्द करना भूल गए
... पर मेरे लिए वे बन्द ही हैं

जैसे दिन में उजाले खुले-खुले
और रात में वे एक कैद में हैं
ये रात ही है? कोई जेल नहीं
यहाँ मेरे लिए कोई खेल नहीं
चमगादड़ें खेल खेलती हैं
और उल्लू हूक लगाते हैं
पक्षी नज़र नहीं आते हैं

पतंगे उड़ते आते हैं
आते हैं कि मरते जाते हैं
ट्रक हाँफते-हाँफते आते हैं
इसी बस्ती में सुस्ताते हैं

न दोस्त ही कोई होता है
न खेल ही कोई होते हैं
बच्चे तो रात में सोते हैं
पर ये सवाल भी होते हैं
क्या दिन बस दिन के काम को हैं
सबकी रातें आराम को हैं?

सम्मानजनक और समुचित काम

सी एन सुब्रह्मण्यम्

पिछले अंक में हमने उत्पादक काम के बारे में पढ़ा था। हमने हर उस काम को उत्पादक काम माना था जिसे हम किसी और से करा सकते हैं। इस नज़रिए से देखने पर हमने पाया था कि महिलाएँ घर के जो कई तरह के काम करती हैं वे सब भी उत्पादक काम हैं, भले ही उन्हें इसके बदले कोई भुगतान न मिले।

मनुष्य अपने कपड़ों, पहनावे या हाव-भाव से ही नहीं बल्कि अपने उत्पादक काम से भी अपने आप को व्यक्त करता है। काम से उसकी पहचान बनती है। इसी काम के आधार पर लोग एक दूसरे से रिश्ते भी जोड़ते हैं। इसी से समाज का ताना-बाना बनता है। एक किसान के लिए खेती करना और अच्छी फसल उगाना उसका जीवन उद्देश्य भी है और पहचान बनाना भी है। एक रेल इंजिन चालक के लिए रेल चलाना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना एक शिक्षिका के लिए पढ़ाना।

काम करना हर मनुष्य की जन्मजात ज़रूरत है और अधिकार भी। लेकिन आधुनिक समाज में हर मनुष्य अपना काम खुद तय नहीं कर पाता है, क्योंकि काम करने के लिए जिन साधनों की ज़रूरत है वह हर व्यक्ति के पास नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए ज़मीन, औज़ार, कच्चा माल, मशीन, या दफ्तर की व्यवस्थाएँ। हमारे समाज में ये संसाधन सब की पहुँच में नहीं है। ज़्यादातर उत्पादक संसाधन कुछ लोगों के नियंत्रण में हैं, चाहे वे ज़मीन के मालिक हों, पूंजीपति हों, दुकानदार हों या सरकारी अफसर। जब बाज़ार में उछाल आता है और चीज़ों की माँग बढ़ती है तब काम के अवसर अधिक हो जाते हैं। लेकिन जब बाज़ार में मन्दी छा जाती है और माँग कम हो जाती है, तब काम के अवसर कम हो जाते हैं, और लोग बेरोज़गारी का सामना करते हैं। लोगों को अपना काम बदलकर नया काम खोजना पड़ता है। इस तरह हमारे समाज में हर व्यक्ति काम पाने के लिए दूसरों पर और बाज़ार पर निर्भर है।

हमारे समाज में बहुत से लोगों के काम के हालात भी ठीक नहीं हैं। किसी को काम ही नहीं मिलता है, किसी को बहुत लम्बे समय के लिए थकाने वाला काम करना पड़ता है, किसी को खतरनाक हालात में काम करना पड़ता है तो किसी को कम वेतन मिलता है वगैरह। ऐसी परिस्थितियाँ पूरी दुनिया में हैं। इसे देखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने सम्मानजनक और उचित काम के मापदण्ड बनाए हैं और विभिन्न देश की सरकारों व मालिकों पर दबाव भी डाला है कि वे इनका पालन करें। इस संगठन को ILO भी कहते हैं और यह संयुक्त राष्ट्र संगठन (UNO) का हिस्सा है। जिनकी रुचि है वे आई एल ओ द्वारा 2014 में प्रकाशित पुस्तिका - *रूल्स आफ द गेम, ए ब्रीफ इंट्रोडक्शन टु इन्टरनैशनल लेबर स्टैण्डर्ड्स*, पढ़ सकते हैं।

यहाँ सम्मानजनक और समुचित काम के कुछ पहलुओं को देखते हैं।

काम का स्वतंत्र चयन

हर व्यक्ति का अधिकार है कि वह अपनी क्षमता, रुचि और इच्छा के अनुसार अपना काम चुने। अगर उसे अपना काम ठीक नहीं लगे तो वह उसे छोड़कर दूसरा काम कर पाए। लेकिन हमारे देश में स्वतंत्र रूप से काम चुनने में कई बाधाएँ हैं। सामाजिक रूप से जाति, धर्म और लिंग के आधार पर काम चुनने पर पाबन्दियाँ हैं। इसके अलावा जो लोग दूसरे तरीकों से सक्षम हैं मगर देख नहीं पाते, सुन नहीं पाते या फिर दूसरों की तरह चल नहीं पाते, उन्हें काम करने नहीं दिया जाता है।

अकसर लोगों से ज़बरदस्ती काम करवाया जाता है। अपने देश में बन्धुआ मज़दूरी प्रथा व्यापक है। गरीबों को अपना खर्च निकालने के लिए अकसर उधार लेना पड़ता है। और इस उधारी को चुकाने के नाम पर उन्हें किसी असम्मानजनक काम से कम मज़दूरी पर बाँध दिया जाता है। कहीं-कहीं तो दास प्रथा भी मौजूद है।

काम में समान व्यवहार

कोई भी काम सम्मानजनक तब होगा जब उसमें किसी से भेदभाव नहीं होगा। लेकिन महिलाओं, आदिवासियों, अल्पसंख्यक लोग, दूसरी तरह से सक्षम लोग, अलग नस्ल या जाति के लोग, अलग भाषा बोलने वाले आदि के खिलाफ काम में भेदभाव किया जाता है। ऐसे लोगों को काम पर ही नहीं रखा जाता है, या फिर उन्हें कम वेतन और कम ज़िम्मेदारी वाले काम पर रखा जाता है। अतः इस भेदभाव को पहचानने और उसे रोकने के लिए कदम उठाने की ज़रूरत है।

काम के घण्टे और छुट्टी

नियमित रूप से किसी को 8 घण्टों से अधिक काम नहीं करना चाहिए। मज़दूर आन्दोलन की 150 साल पुरानी माँग है कि 8 घण्टे काम, 8 घण्टे आराम और 8 घण्टे मनोरंजन व अन्य पारिवारिक, सामाजिक व राजनैतिक काम मज़दूरों का अधिकार है। इस बीच उत्पादकता बढ़ने के कारण काम के घण्टों को और कम करने की ज़रूरत महसूस हुई है - ILO का सुझाव है कि दिन में साढे छः घण्टे काम का मानक बनना चाहिए। लेकिन भारत जैसे ज़्यादातर देशों में 8 घण्टे से भी अधिक काम करवाने की प्रथा है, जबकि होना यह चाहिए कि हफ्ते में कम से कम एक दिन की छुट्टी हो (वेतन सहित), तीज त्यौहार और बीमारी पर भी वेतन के साथ छुट्टी मिले। इसके अलावा हर कामगार को साल भर में कम से कम 21 दिन वेतन के साथ छुट्टी लेने का अधिकार हो ताकि वह सैर करने आदि के लिए समय निकाल सके।

बाल मज़दूरी

बच्चों से काम करवाना उनकी स्वतंत्रता के खिलाफ है। अपने हित या अहित के बारे सोच-समझकर निर्णय लेने के लिए किसी को कम से कम 18 साल का होना चाहिए। बच्चों से काम करवाना उनके शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। साथ ही वे शिक्षा से भी वंचित रह जाते हैं। इसलिए 15 साल से कम उम्र वाले बच्चों से किसी भी तरह का काम करवाना और 18 साल से पहले खतरनाक काम करवाना गलत है।

उचित वेतन

हर व्यक्ति को आजीविका चलाने के लिए अपने काम के अनुरूप वेतन या कीमत मिलना चाहिए। भारत जैसे बहुत से देशों में सरकारें यह तय करती हैं कि मज़दूरों को कम से कम कितनी मज़दूरी मिलनी चाहिए। लेकिन इन कानूनों का पालन बहुत कम होता है। उचित वेतन उचित समय में मिले यह सभी कामगारों का अधिकार है।

संगठन और सामूहिक सौदे

मजदूरों को जब काम पर रखा जाता है तो मालिक उन्हें एक-एक करके नियुक्त करते हैं और वेतन सम्बन्धित बातचीत करते हैं। ऐसे में मज़दूरों का पक्ष कमज़ोर पड़ जाता है और वे मालिक की शर्तों को मंज़ूर करने पर विवश हो जाते हैं। मज़दूरों का पक्ष तब पुख्ता होगा जब एक उद्योग या कारखाने के सारे मज़दूर संगठित होकर मालिकों से सौदा करें। इसे 'सामूहिक सौदा' भी कहते हैं। यह तभी सम्भव है जब मालिक व सरकार मज़दूरों के संगठन बनने दें। उन्हें मान्यता देते हुए उनसे बातचीत के लिए तैयार हों। अकसर यह होता नहीं है। मालिक, मज़दूर संगठनों को बनने से रोक देते हैं, संगठन बनाने वाले मज़दूरों को काम से निकाल देते हैं या अपने ही चहेतों को जोड़कर संगठन बनाकर मज़दूरों पर थोप देते हैं। मज़दूरों का अहित न हो और उनकी जायज़ ज़रूरतें पूरी हों इसके लिए ज़रूरी है कि मज़दूरों के संगठन बने और उन्हें औपचारिक मान्यता मिले।

काम के दौरान सुरक्षा

दुनिया भर में हर साल लगभग 20 लाख लोग औद्योगिक दुर्घटनाओं में अपनी जान खोते हैं। कारखानों में तापमान, मशीनों की आवाज़, धूल-धुआँ आदि सामान्य से बहुत अधिक होता है, जिसके कारण मानसिक और शारीरिक बीमारियाँ हो सकती हैं। कई क्षेत्र जैसे परमाणु ऊर्जा संयत्रों में विकिरण से कई खरतनाक बीमारियाँ होती हैं। इस कारण दुर्घटना रोकने के लिए मशीनों का सही रख-रखाव ज़रूरी है। साथ ही मज़दूरों को सुरक्षा कवच जैसी सामग्री मिलना चाहिए। ऐसी जगह जहाँ किसी बीमारी की आशंका हो, वहाँ काम के घण्टों को कम करने की ज़रूरत है ताकि उनका बुरा असर कम हो।

सामाजिक सुरक्षा

कोई भी कामगार हमेशा काम करने व कमाने की स्थिति में नहीं होता है। बीमारी में, शरीर के किसी अंग का नुकसान होने पर, बुढ़ापे में, कोई भी पहले की तरह काम नहीं कर सकता है। लेकिन उन्हें भी सम्मानजनक जीवन का हक है। इसी तरह गर्भवती महिलाएँ और जिनके बच्चे छोटे हैं वे महिलाएँ काम नहीं कर पाती हैं। अकसर व्यापक आर्थिक कारणों (संकट, मन्दी, कारखाने का बन्द होना आदि) से लोग अपने नौकरी खो बैठते हैं, बेरोज़गार हो जाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में उन्हें अपने व अपने परिवार के गुज़ारे के लिए आय तो चाहिए। इसके लिए सभ्य समाजों में सरकार, मालिक और मज़दूर मिलकर आकस्मिक और पेंशन निधि बनाते हैं जिनसे मज़दूरों को विकट परिस्थितियों में भी आमदनी होती रहे। बीमार होने पर उनका निःशुल्क इलाज हो पाए इसकी भी व्यवस्था समाज द्वारा हो।

काम की औपचारिकता

किसी मज़दूर या कामगार को इन सभी अधिकारों को उपलब्ध कराना सरकार का काम है। मगर यह तभी सम्भव है जब कामगार का नाम, उसके मालिक का नाम और उसके काम की जगह सरकार के पास पंजीकृत हो। तभी सरकार या न्यायालय मालिक आदि को बाध्य कर सकते हैं कि वे मज़दूरों का अहित न करें। लेकिन भारत जैसे देशों में 90 प्रतिशत से अधिक कामगार पंजीकृत नहीं हैं। या तो वे खेतों में काम करते हैं, या घरों पर काम करते हैं या फिर अवैध कारखानों, स्कूल जैसी संस्थाओं में काम करते हैं। इसलिए उन्हें किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा या अन्य अधिकार नहीं मिल पाते हैं।

काम की स्थिरता

जब हम कोई काम करते हैं, हम चाहते हैं कि यह लम्बे समय के लिए रहे ताकि हम अपनी आजीविका के बारे में निश्चिन्त रहकर मन लगाकर काम कर सकें। जो लोग रोज़न्दारी करते हैं या अस्थाई कामों से जुड़े हैं वे कब काम से निकाले जाएँगे, उनकी दुकान या उनका धन्धा कब बन्द हो जाएगा, उनको पता नहीं रहता है।

अकसर कामगारों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने पर या बीमार होने पर काम से निकाल दिया जाता है। किसी को इस तरह उचित कारण के बिना काम से निकालना उसके अधिकारों का हनन है।

अतः किसी भी समाज के समुचित विकास के लिए यह ज़रूरी है कि वहाँ के कामकाजी लोग सहज वातावरण में, बिना किसी दबाव के काम करें। इसमें घर पर काम करने वाली महिला भी शामिल हैं, किसान, खेत मज़दूर भी शामिल हैं, ठेले वाले, रिक्शा वाले, स्कूल की शिक्षिका, कोचिंग मास्टर और कारखानों के मज़दूर और मैनेजर भी। चकमक

छिपकली, छिपकली!

क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे घर में एक जंगली शिकारी भी रहता है?

घबराओ मत, हम घरों में पाई जाने वाली छिपकली की बात कर रहे हैं। अलग-अलग रंगों और आकारों की होते हुए भी ये सब छिपकली परिवार की सदस्य होती हैं।

फील्ड डायरी

उन्हें ढूँढो

तस्वीरों के फ्रेम, घड़ियों के पीछे की जगह, दीवारें, छत या बाहर लगे बिजली के खम्भे छुपने के लिए छिपकली की सबसे पसन्दीदा जगह हैं। उन्हें पकड़ने की कोशिश मत करना!

उन्हें खाते हुए देखो

जब छिपकलियाँ खाती हैं तो ऐसा लगता है मानो आइसक्रीम का कोन चाट रही हों। फर्क बस इतना होता है कि ऐसा करने की उनकी गति कई हज़ार गुना ज़्यादा होती है। तुमने उन्हें क्या खाते हुए देखा?

उनके मल को देखो

छिपकली का मल बासमती चावल के दाने बराबर होता है। यह काले रंग का होता है और उनका सिरा सफेद होता है।

समय पर ध्यान दो

कि किस समय छिपकली को ढूँढना आसान होता है, दिन में या रात में? क्या वो दिन में अपना रंग बदलती हैं?

उन्हें सुनो

वे किस तरह की आवाज़ निकालती हैं? उनकी आवाज़ की नकल करने की कोशिश करो।

अलग-अलग भाषाएँ

स्कूल में अपने दोस्तों से और अपने घर के आसपास रहने वाले अन्य लोगों से पूछो कि वे अपनी मातृभाषा में छिपकली को क्या कहते हैं?

क्या तुमने इनमें से किसी को देखा है?

उत्तरी घरेलू छिपकली

यह उत्तर भारत के घरों में आमतौर पर पाई जाती है।

दीमक पहाड़ी छिपकली

यह आमतौर पर पश्चिमी भारत और सूखे व खुले प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में पाई जाती है।

विशेषज्ञ से पूछो

फरीदा से मिलो।

वे पिछले अठारह सालों से बतौर हर्पिटोलॉजिस्ट (जो सरिसृप और उभयचर का अध्ययन करते हैं) काम कर रही हैं।

फरीदा, क्या छिपकलियाँ ज़हरीली होती हैं?

बिलकुल भी नहीं। घरेलू छिपकली हमारी अच्छी दोस्त होती है जो कॉकरोचों और मच्छरों का खात्मा कर हमारे घर को साफ-सुथरा बनाए रखती है। वास्तव में, सेंट्रल अमेरिका में इन छिपकलियों को लिम्पिया सासा कहा जाता है जिसका मतलब होता है 'घर साफ करने वाला'।

क्या हम उन्हें छू सकते हैं?

तुम आराम से उन्हें छू सकते हो लेकिन हो सकता है कि वो अपनी पूँछ पीछे छोड़कर आगे भाग जाएँ। जब भी कोई उन पर हमला करता है या उन्हें किसी से खतरा महसूस होता है बचाव के तौर पर छिपकलियाँ अपनी पूँछ पीछे छोड़ देती हैं। और इस स्थिति में तुम उनके लिए खतरा ही हो।

यदि तुम्हारे मन में छिपकलियों को लेकर कोई सवाल हों तो तुम फरीदा को chakmak@eklavya.in पर लिख सकते हो।

प्रतियोगिता

छिपकलियों के बारे में अपनी फील्ड डायरी साझा करने के लिए हमें ईमेल करो। छिपकली को दर्शाती कोई तस्वीर/कविता/हाइकू/तुकबन्दी हमें भेजो और भारतीय सरीसृपों के बारे में एक पुस्तक जीतने का मौका पाओ।

nature conservation foundation
science for conservation

नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन द्वारा विकसित

मेरा पन्ना

वह नींबू का पेड़

ऋचिता सतपुते
चौथी, कमला निंबकर बाल भवन
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

एक समय हमारे घर के आँगन की दीवार के पास नींबू का एक पेड़ हुआ करता था। एक दिन बहुत ज़ोर से आँधी-पानी आया। उस बारिश में हमारा नींबू का पेड़ गिर गया। तब मैंने और मेरे परिवार ने उस नींबू के पेड़ को बचाने का सोचा। हमने उसे फिर से खड़ा किया और आँगन में लगी जाली से एक रस्सी के जरिए बाँध दिया।

पेड़ फिर से जी उठा। लेकिन हमारी यह खुशी ज़्यादा दिन नहीं टिकी। क्योंकि कुछ दिनों बाद एक बहुत ही अजीब-सी घटना घटी। एक पतंग बिजली के तारों में उलझ गई थी। उसका मांझा हमारे नींबू के पेड़ पर उग रही गणेशबेल तक आ रहा था।

दिन पर दिन हमारा नींबू का पेड़ सूखने लगा। पेड़ की सारी पत्तियाँ भी सूख गईं। हमने अपने नींबू के पेड़ को हमेशा के लिए खो दिया।

चित्र: निश्चल, पूर्णा लर्निंग सेंटर
बैंगलूरु, कर्नाटका

कूना उस छोटे पत्थर को सोच रही थी कि पास से देखने में वह छोटा क्यों दिख रहा है। उसके जितना पास जाते लगता और छोटा हो जाता। जब उसके करीब-करीब पास आ गए तो कूना को लगा कि अभी दिख रहा था कहाँ चला गया। यह पत्थर अपने समीप पहुँचनेवालों से छोटा होते हुए छुप रहा था। कहीं ऐसा न हो उसके पास पहुँचें तो वह न दिखे। और यही हुआ। पास पहुँचे तो चौखट पर चार-पाँच कंकड़ के बीच एक छोटा-सा कंकड़ दिख रहा था। वे समझ नहीं पाए कि ऊपर से जिस पत्थर को देखा था वह छोटा हुआ कौन-सा कंकड़ है। बोलू ने देखू को आवाज़ लगाई। बोलू की गूँजती आवाज़ फैल गई। "देखू, बीच का पत्थर कौन-सा है? मुझे नहीं दिख रहा है।"

देखू को आश्चर्य हुआ कि बोलू ऐसा क्यों पूछ रहा है। पत्थर तो वहीं है।

देखू ने कहा, "पत्थर वहीं है, बोलू।"

बोलू चिन्तित हुआ। इतने में सूर्य की एक पतली किरण पत्थर पर केन्द्रित हो गई। इसे कूना ने देखा। उसने बोलू से कहा, "वही पत्थर है, जिस पर किरण है।"

किरण ने बोलू की मुश्किलों को हल कर दिया था। कूना उसे उठाने के लिए बढ़ी। चुटकी से पकड़ा। वह उसे ठीक से पकड़ भी नहीं पा रही थी। उठाने का तो सवाल ही नहीं उठता। वह उसे उठा नहीं सकी।

कूना कहती है, "बोलू, मैं कंकड़ उठा नहीं पा रही हूँ। तुम उठाओ।"

बोलू ने उसे उठाने के लिए चुटकी से पकड़ना चाहा तो वह कंकड़ जैसे उसकी उँगली में आकर स्वयं चिपक गया। बोलू की मुट्ठी में आकर वह बन्द हो गया। ऐसा लगता है कि कंकड़ को बोलू की मुट्ठी की ज़रूरत थी। दुबारा बोलू ने चाहा कि वह चौखट पर कंकड़ को रख दे। और जैसे ही बोलू ने अपनी फैली हुई हथेली को चौखट के ऊपर रखा तभी फिर से सूर्य की किरण उस कंकड़ पर आकर रुक गई। बोलू ने उस कंकड़ को उलटाना चाहा, पर कंकड़ बोलू की हथेली पर चिपका ही रहा। बोलू ने अपनी मुट्ठी फिर से बन्द कर ली। बोलू को लगा अब इस कंकड़ के कहीं गिर जाने की सम्भावना समाप्त हो गई है। और इस छोटे कंकड़-पत्थर को ले जाने का यही तरीका है कि यह चिपका रहे। यह

सूर्य की किरण

विनोद कुमार शुक्ल

चित्र: हबीब अली

इतना छोटा पत्थर है कि आँखों के सामने भी खोया जैसा दिखता है।

बोलू ने जब बीच के पत्थर को उठाया था तो कूना ने बचे हुए कंकड़ों को गिनकर उठाया। पाँच कंकड़ थे। कूना ने एक-एक कर चुटकियों से उन्हें उठाया और अपनी फ्रॉक के एक कोने में बाँध दिया। बोलू और कूना जब साथ रहते हैं तब सबका ध्यान बोलू की तरफ रहता है। और बोलू, कूना का ध्यान रखता है। पर इस बार न बोलू ने, न और किसी ने कूना को कंकड़ उठाते हुए और फ्रॉक में बाँधते हुए देखा।

वे दोनों चारों तरफ पानी की निकासी को ढूँढ रहे थे। पानी के टपकने की आवाज़ आ रही थी। जहाँ यह आवाज़ थी उन्हें पानी नहीं दिखा। गीलापन भी नहीं था। बोलू दीवाल को टटोलने के लिए हाथों का इस तरह उपयोग कर रहा था जैसे वह भूल गया है कि उसके हाथ में कंकड़ है। बोलू को कंकड़ का जो भी भार हो उसका एहसास नहीं हो रहा था।

पानी की निकासी का रास्ता उन्हें इसलिए नहीं दिख रहा था क्योंकि कूना के पत्थर, जिसने ऊपर पानी के रास्ते को रोक दिया था, नीचे गिरकर निकासी के मुख में जाकर अटक गए थे। बाहर से आती हवा से वे खड़-खड़ हिल रहे थे। कूना ने उन पत्थरों को हटाना शुरू किया। हवा तेज़ी से अन्दर आ रही थी और उसे एक बड़ा मुहाना दिखाई दिया। मुहाना इतना बड़ा तो था कि वे बैठे-बैठे अन्दर घुस सकते थे। निकलने के पहले उन्होंने मित्रों को बताया कि पानी निकासी का रास्ता मिल गया है और हम दोनों बाहर निकलने की कोशिश करते हैं। बोलू मुहाने के अन्दर घुस गया। पीछे कूना थी। वे हाथ और घुटनों के बल धीरे-धीरे अँधेरे रास्ते पर चल रहे थे। पानी का यह पथरीला रास्ता एकदम चिकना था। पर, अन्दर जगह इतनी थी कि वे चल पा रहे थे। बोलू अपनी दोनों हथेलियों को चौपाए की तरह टिकाता हुआ घुटनों से चल रहा था। और यही तरीका कूना का भी था। पर यह आश्चर्य था कि बोलू कुछ भी नहीं बोल रहा था। बोलू अपनी हथेली पर चिपके कंकड़ को भूल चुका था। और बोलू के चलने से हथेली पर कंकड़ के गड़ने का कोई एहसास नहीं था। वे कुछ ही दूर चले होंगे कि उन्हें थोड़ा उजाला दिखाई दिया। आगे बढ़ते जाने से वे उजाले के समीप होने लगे थे। उन्हें बाहर चिड़ियों की आवाज़ आने लगी और वे बाहर निकलकर खुश हो गए। मुहाने के पास निकलने के पहले अन्दर इतनी जगह थी कि कूना खड़े होकर बाहर आई। वे बौना पहाड़ पर किसी जगह पर थे। पर किस जगह वे अभी समझ नहीं पाए थे। वे गोल पत्थर को ढूँढने चट्टान पर खड़े हो गए।

कूना ने आवाज़ दी, “देखू, हम बाहर आ गए। हमें देखकर ढूँढो या तुम हमको दिख जाओ।”

दोनों एक चट्टान के ऊपर खड़े थे। लगता था कि ठीक उनके ऊपर गोल पत्थर की जगह थी। तत्काल देखू और सब लड़के ऊपर से उनको नीचे झाँकने लगे।

देखू ने और सबने आवाज़ दी, “हम यहाँ हैं। तुम लोग वहीं खड़े रहो। हम तुम्हारे पास आ जाते हैं।”

वे दोनों वहीं खड़े होकर उनके आने का रास्ता देख रहे थे। बोलू, कूना दोनों को कंकड़-पत्थर की बिलकुल याद नहीं थी। एक काम पूरा हुआ का उनका सन्तोष इतना था कि काम की उपलब्धि तक को अपनी खुशी में भूल गए। शायद इसका कारण बोलू के अचेतन में यह रहा होगा कि कंकड़ उसे छोड़कर कहीं नहीं जाएगा। उसने खुशी से अपनी हथेलियों को रगड़ा। पर, उस रगड़ में कंकड़ का कोई एहसास नहीं था। दोनों ताली बजा-बजाकर खुशी प्रकट कर रहे थे।

वे सब आ गए। सब चिल्ला रहे थे। तब अचानक भैरा ने बोलू से पूछा, “वो पत्थर कहाँ है?”

बोलू ने जैसे चौंककर प्रतिक्रिया में अपनी हथेली सबके सामने फैला दी कि देखो। पर हथेली पर कंकड़ नहीं था।

देखू ने कहा, “हथेली तो खाली है।”

“देखू, देखो पास से यह कंकड़ छोटा दिखता है। तुम ठीक से देखो,” बोलू ने कहा।

बोलू ने और सबने देखा कि उसकी हथेली पर कंकड़ नहीं है। लगता है कंकड़ गिर गया। सब दुखी हो गए।

बादल हट गए थे। वे उसी रास्ते पर लौटने लगे जिधर से बोलू आया था। शायद, किरण ज़मीन पर पड़े हुए कंकड़ को दिखा दे।

बोलू सबसे पीछे था। कूना रास्ता बताते हुए आगे थी। थोड़ी दूर तक तो कूना गई। फिर रुक गई। उसे समझ में नहीं आया कि वह किधर से आई थी। कूना ने बोलू से कहा, “मैं रास्ता भूल गई।”

कोई बना हुआ रास्ता तो था नहीं। जहाँ पैर रख दो तो लगता है कि रास्ते पर पैर रखा। पत्थरों के बीच से वे लौटे थे। वे जिधर से लौटे थे उधर लौटने के अनेक रास्ते थे। उन्हीं के बीच उनका लौटा हुआ रास्ता खो चुका था। वे अगर कहीं लौटे तो वह कोई दूसरा ही रास्ता होगा। बोलू रास्ता दिखाने आगे आया। तो सबने देखा कि बोलू की पीठ पर एक जगह सूर्य की किरण केन्द्रित थी। यह एक तेज़ किरण थी। बोलू के पीछे कँधे के पास।

लगता है जब बोलू हथेली के बल चल रहा था तो कंकड़ ने सोचा होगा कि उसके गड़ने से हथेली पर तकलीफ होगी। और वह एक जीव की तरह सरकता हुआ पीठ पर आ गया था। बोलू ने कमीज़ खोली। कंकड़ उसकी पीठ पर कीड़े की तरह चिपका दिख रहा था। बोलू ने दोस्तों से कहा, “मेरी हथेली पर उसे रख दो।”

एक-एक कर सबने कोशिश की। पर बोलू की पीठ से वे कंकड़ को निकाल नहीं पाए। बोलू अपना एक हाथ पीठ पर जहाँ तक उसका हाथ कंकड़ के पास जा सकता था, ले गया। तभी कंकड़ वहाँ से खिसकता हुआ बोलू की हथेली पर जाकर चिपक गया। इसे सबने देखा। बोलू ने अपना हाथ हटा लिया। उसने कमीज़ पहन ली।

बोलू ने कहा, “चलो।”

वे सब उछलते-कूदते कंकड़-पत्थर को लिए तराशे आदमी के पास चल पड़े। बोलू को लग रहा था कि यह कंकड़ अब तक मिले पत्थरों से सबसे छोटा और सबसे भारी है। लेकिन, बोलू को इसका कोई भार नहीं लग रहा था। उसे शक होता था कि कहीं यह भारी पत्थर न होकर हल्का निकल जाए। परन्तु, इस पत्थर का व्यवहार विचित्र था। यह साधारण पत्थर नहीं था। ऐसा लगता है कि इस पत्थर के पास दिमाग है। यह एक जीव की तरह व्यवहार कर रहा था। यह कोई ऐसा जीव हो सकता है जो पत्थर के खोल में हो। जैसे गिरगिट प्राकृतिक रूप से अपने को बचाने के लिए रंग बदलता है और अपने को छुपा लेता है। उसी तरह यह पत्थर अपनी जान बचाने के लिए किसी के समीप आने पर अदृश्य होने लगता है। और दूर से यह बड़ा होकर देखनेवालों को आकर्षित करता है। अगर यह पत्थर नहीं हुआ तो तराशे आदमी के लिए इसका कोई महत्व नहीं होगा।

रास्ते में उन्हें काँवर लिए सयाने बाबा मिले। वे लौट रहे थे। उनका काँवर खाली था। शायद पत्थर पहुँचाकर वे लौट रहे थे। बोलू और उनके मित्रों को देखकर वे प्रसन्न हुए।

“बोलू, कहाँ जा रहे हो?” उन्होंने पूछा।

बोलू ने कहा, “बाबा, अब आपको वज़न उठाना नहीं पड़ेगा। लगता है मुझे अन्तिम सबसे छोटा पत्थर मिल गया है।”

“कहाँ है?” खुशी से चौंककर उन्होंने कहा।

बोलू ने अपनी हथेली खोलकर दिखाई। पर हथेली में कंकड़ नहीं था। बोलू ने अपने साथियों से कहा, “मेरी पीठ पर देखो।”

पत्थर बोलू के शरीर पर नहीं था। वह निराश हो गया। सूर्य आकाश की ढलान पर था। सूर्य की कोई किरण बोलू के आसपास नहीं थी। बस डूबते सूरज का उजाला चारों तरफ था।

बोलू ने कहा, “कहीं उड़ गया।”

काँवरवाले सयाने बाबा ने कहा, “सबसे भारी पत्थर नहीं उड़ेगा। सबसे हल्का और छोटा उड़ सकता है।”

बोलू उदास था। बोलू ने कहा, “वह पत्थर दूर से बड़ा दिखता था। और पास से छोटा। उसका व्यवहार एक समझदार जीव की तरह था।”

काँवरवाले सयाने बाबा ने कहा, “क्या तुम मुझे वहाँ ले जा सकते हो? अच्छा ये बताओ क्या वह पत्थर वहाँ अकेला था या उसके साथ दूसरे पत्थर भी थे?”

कूना ने कहा, “वह अकेला पत्थर नहीं था। उसके साथ दूसरे पत्थर भी थे।” तब कूना की मुट्ठी में फ्रॉक की वह गठान थी जिसमें सभी पत्थर बँधे थे।

काँवरवाले बाबा ने बोलू के पास जाकर फुसफुसाते हुए कहा, “तुम मुझे वहाँ ले चलो। हो सकता है उस पत्थर की आदत अकेले रहने की न हो। वह अपने साथियों के पास लौट गया।”

बोलू ने कहा, “ठीक है बाबा। पर मैं तराशे व्यक्ति को यह सब बताकर जाना चाहता हूँ।”

सयाने बाबा ने कहा, “तुमने मुझे बता दिया। मैं उन्हें बता दूँगा। मेरा काँवर खाली है। वहाँ जाकर मैं कुछ

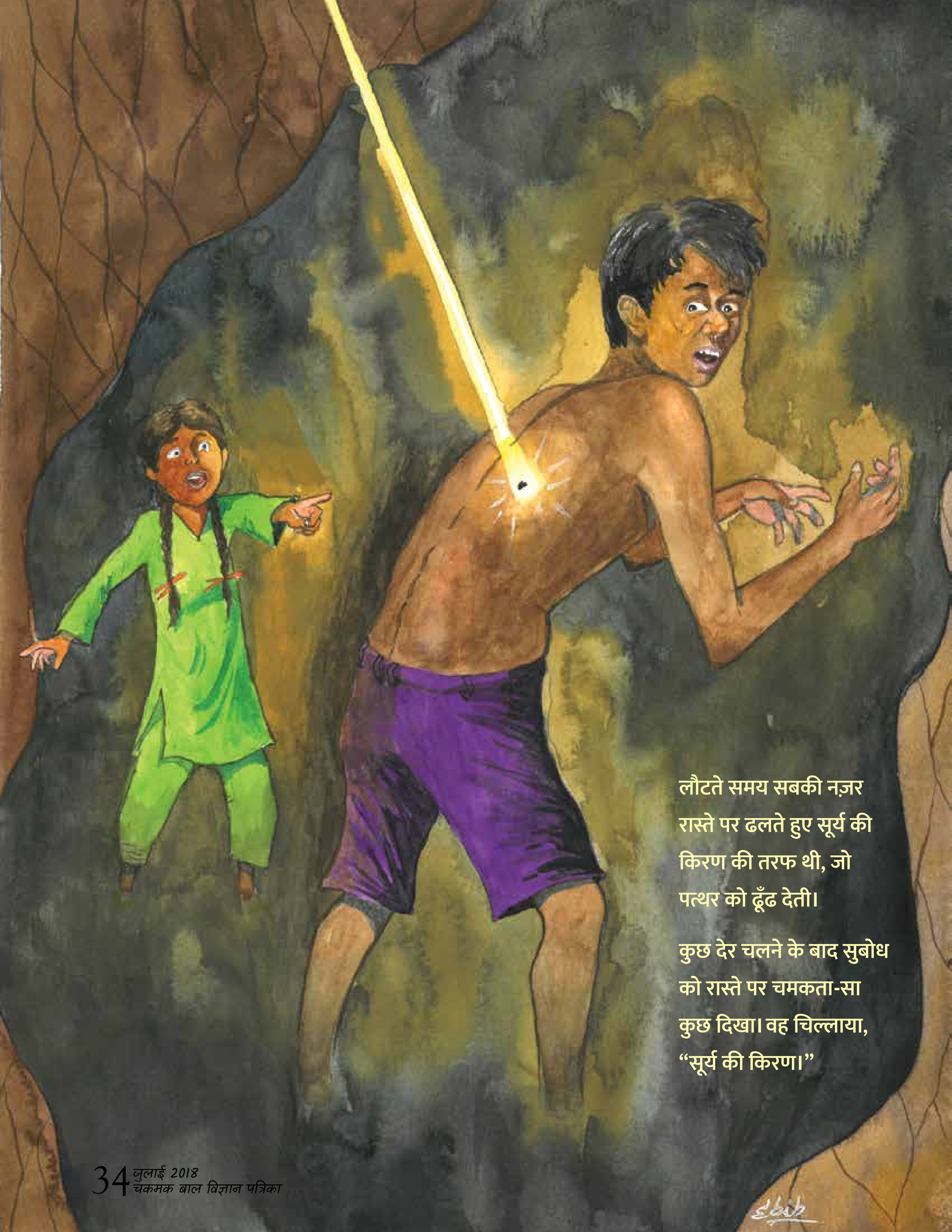

लौटते समय सबकी नज़र रास्ते पर ढलते हुए सूर्य की किरण की तरफ थी, जो पत्थर को ढूँढ देती।

कुछ देर चलने के बाद सुबोध को रास्ते पर चमकता-सा कुछ दिखा। वह चिल्लाया, “सूर्य की किरण।”

पत्थरों को रखकर ले आ सकूँगा। और मेरा काम हो जाएगा। मैं आजकल खाली काँवर लिए घूमता हूँ। क्या तुम मेरी सहायता नहीं करोगे?"

बोलू ने कहा, "क्यों नहीं करूँगा!"

कूना ने कहा, "बोलू, मैं काँवरवाले बाबा को रास्ता बता दूँगी। तुम तराशे व्यक्ति को इस गिरगिट-पत्थर के बारे में बता दो। यह पत्थर रंग तो बदलता है, आकार को भी बदल लेता है।"

बोलू ने कहा, "इनकी सहायता पहले करनी चाहिए। हम सब चलेंगे।"

लौटते समय सबकी नज़र रास्ते पर ढलते हुए सूर्य की किरण की तरफ थी, जो पत्थर को ढूँढ देती।

कुछ देर चलने के बाद सुबोध को रास्ते पर चमकता-सा कुछ दिखा। वह चिल्लाया, "सूर्य की किरण।"

सुनकर सब उसकी तरफ बढ़ने लगे। सबको लगा की पत्थर अपने साथियों की तरफ लौटते रास्ते पर ही मिल गया।

पर, देखू ने कहा, "काँच है। सुनकर सबको निराशा हुई।"

काँवरवाले सयाने बाबा के साथ वे बौने पहाड़ की तराई पर पहुँच गए। बौने पहाड़ को देखकर सयाने बाबा ने कहा, "यह पहाड़ मेरे बचपन का पहाड़ है। मैं बड़ा हो गया। पर पहाड़ बड़ा नहीं हुआ। पहाड़ का बचपना हज़ारों साल का होता है। पर कोई कारण कभी ऐसा ज़रूर होगा कि यह अपनी युवा अवस्था में बड़ा हो जाए। इस पहाड़ का हृदय बहुत बड़ा है। हो सकता है यह समझदारी से अपने अन्दर बड़ा हो रहा हो। बाद में यह बाहर से बड़ा होने लगेगा। शुरुआत में मैंने यहीं से सबसे पहला पत्थर उठाया था। वह बहुत बड़ा था। पहाड़ के अनुपात में बड़ा। पर उसका वज़न उस अनुपात में अधिक नहीं था। हो सकता है इसके गर्भ में वज़नदार पत्थर हों। ज़मीन के गर्भ में जाने की मैंने कभी कोशिश नहीं की। अभी धरती की सतह पर ही घूमता हूँ।"

बोलू ने कहा, "मुझे जो पत्थर मिला है वह ज़मीन के नीचे से मिला है। पर उसमें जाने का रास्ता ऊपर से है, गहराई में उतरना पड़ता है। पानी जो ज़मीन के अन्दर अपना रास्ता बनाकर बहता है, उसी रास्ते से मैंने इस कंकड़-पत्थर को पाया था।"

काँवरवाले सयाने बाबा ने निराशा से कहा, "तब रहने दो। नहीं जाते। अभी ऊपरी सतह का काम कर लूँ। मुझ से कहा जाएगा तब मैं गर्भ के पत्थरों पर ध्यान दूँगा। अच्छा हो कि तुम तराशे व्यक्ति से इस पत्थर के बारे में कुछ न बताओ। हो सकता है गर्भ के पत्थर को पाकर वे नाराज़ हो जाएँ। खनन करना उन्हें अपराध लगता है। यह कहकर वे जंगल की तरफ लौट गए।"

कूना ने काँवरवाले सयाने बाबा के जाने के बाद कहा, "बाबूलाल होटल दिख रही है। क्या बाबूलाल महराज के पास चलें?"

बोलू ने कहा, "नहीं।"

जिस तरह तराशे व्यक्ति खनन को अपराध मानते हैं उसी तरह बाबूलाल महराज पेड़ को काटने, पत्ती तोड़ने तक को अपराध मानते हैं। बाबूलाल होटल अभी खुली है। इसके कई कारण हो सकते हैं। बजरंग होटल में किसी के ठहरने की व्यवस्था नहीं थी। बाबूलाल महराज की होटल में वह सारी व्यवस्था थी जो पृथ्वी में होती है। मैदान, तालाब, जंगल, आकाश, एक बहुत बड़ा इलाका बाबूलाल होटल थी। बाबूलाल महराज पृथ्वी के इस इलाके की देख-रेख करते थे। पूरी पृथ्वी की देख-रेख तो नहीं कर सकते थे। पृथ्वी की देख-रेख एक पेड़ की देख-रेख से भी हो सकती है।

यहाँ रहने का मतलब संसार में ही रहना होता था। अकेले रहने में भी संसार में रहना होता है। बाबूलाल होटल का रहना पृथ्वी के सानिध्य के साथ रहना था। इतने सानिध्य कि पृथ्वी में।

बोलू, कूना और उनका अभी तक कोई साथी भी इस होटल में ठहरकर रुका नहीं था। होटल में तो बाहर के लोग ठहरते हैं। बोलू, कूना आदि यहीं के लोग थे। यह जंगल, आकाश, जीव-जगत, यहाँ की धरती, यहीं के हैं, बाहर के नहीं। यहीं के होकर हम अपना घर बना सकते हैं।

जारी...

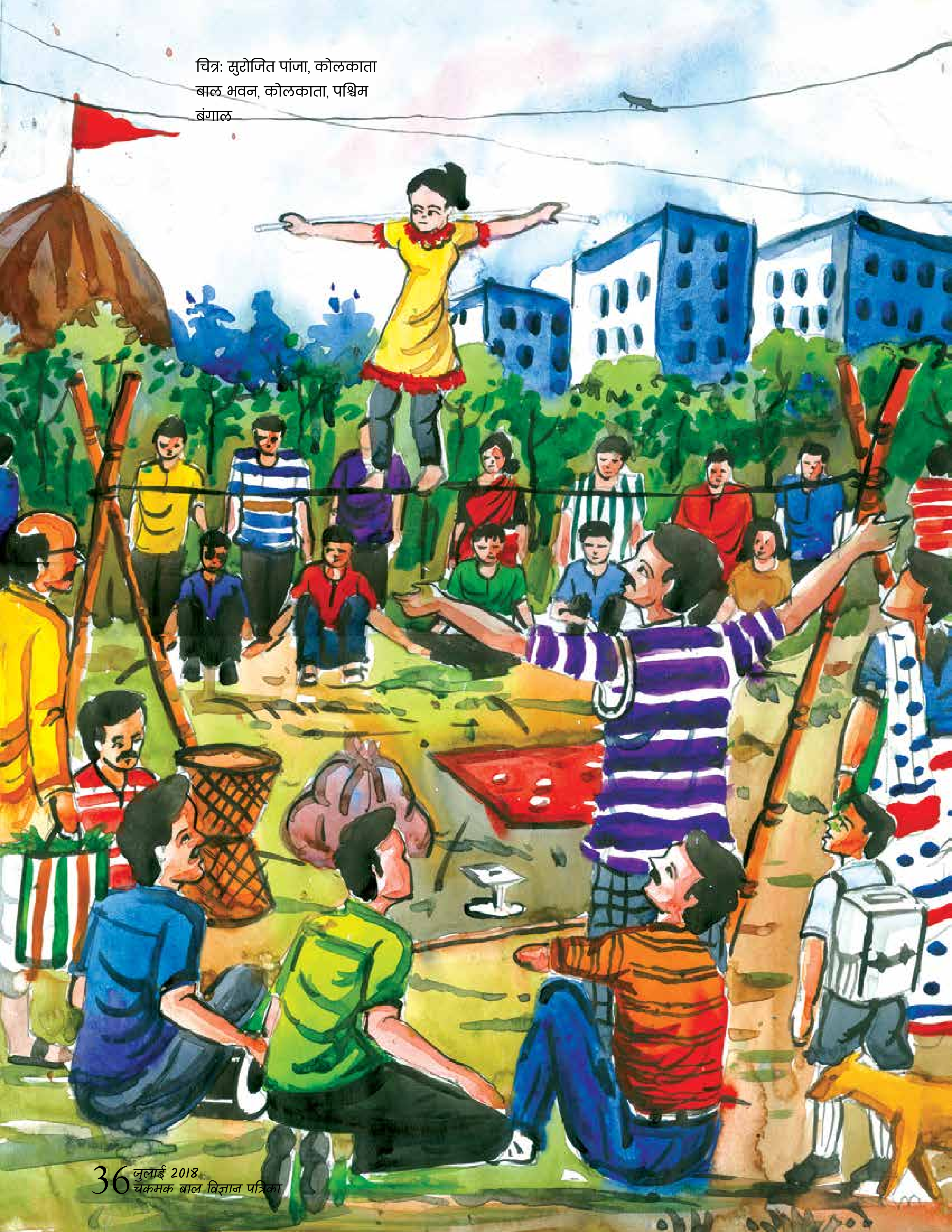

चित्र: सुरोजित पांजा, कोलकाता
बाल भवन, कोलकाता, पश्चिम
बंगाल

काश मैं भी चिड़िया होती

फिजा खान
छठी, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड

काश मैं भी चिड़िया होती, उड़ती ऊँचे आसमान में
कभी जाती सुन्दर जंगल में और कभी खुले मैदान में
सुन्दर से मेरे पंख होते, उनको खूब फहराती
देख-देखकर उन पंखों को खूब मैं इतराती
जब मन करता बैठ जाती, जब मन करता उड़ जाती
सबकी रंगत देख-देखकर मन ही मन इठलाती
कभी बैठती फूलों पर और कभी तैरती पानी में
और कभी जब थक जाती तो सोती पेड़ की डाली में
भूख लगे तो मीठे फल खाती और फिर मैं उड़ जाती
चीं-चीं की आवाज़ से दुनिया को मैं जगाती
काश मैं भी चिड़िया होती उड़ती ऊँचे आसमान में

मम्मी जब छोटी थीं

अर्पिता पाटीदार
सातवीं, देवास, म. प्र.

जब मेरी मम्मी छोटी-सी थीं तब वह पढ़ने जाती थीं। उनको पढ़ने की बड़ी लगन थी। उस समय मेरी नानी के साथ 5 बजे उठ जाती थीं और नानी खाना बनाती थीं। तब तक मम्मी झाड़ू एवं जानवरों को चारा-पानी पिला देती थीं। उस समय वहाँ पर पानी की कमी थी। जो कि आज भी है। मम्मी आधा किलोमीटर दूर चलकर जाती थीं और सिर पर दो-दो मटकियाँ लेकर पानी लेने जाती थीं। बहुत तेज़ धूप गिरती थी। मेरी मम्मी की कोई बहन नहीं है। लेकिन उनकी बुआ की लड़की को वह अपनी बहन समझती हैं। वह इतने अच्छे-से रहती हैं कि कोई बहनें नहीं रहती होंगी। जब मम्मी नानी की बात नहीं सुनती थीं तब कई बार उन्हें डाँट भी खानी पड़ती थी।

चित्र: सुहाना
दस वर्ष, प्रोत्साहन केन्द्र, दिल्ली

बच्चे और भालू की कहानी

एक बार की बात है। मेरी गाय के बच्चे को भालू ने पकड़ लिया। तभी मेरे पापा ने बच्चे की चीख सुनी तो मेरे पापा की आँख खुली। पापा बाहर पहुँचे तो देखा भालू बच्चे को ले जा रहा था। तभी मेरे पापा लकड़ी उठाकर भालू को भगाने लगे। जब भालू भाग गया तो हमने देखा कि बच्चे के चोट लगी है। मेरे पापा ने उसे दवा लगाई और फिर उसे गौशाला में छोड़ दिया।

मोहिनी राना
चौथी, रा. प्रा. विद्यालय, ऊँची महुवर
खटीमा, उत्तराखण्ड

शरारती हाथी

एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। उन जानवरों में से एक हाथी था। वह बड़ा शरारती था। वह किसी भी छोटे जानवर को पानी के तालाब में फेंक देता था। जानवर उस हाथी से बहुत परेशान थे। एक दिन भालू मामा केले का ठेला लेकर जा रहे थे। हाथी ने उनका ठेला उलटा कर दिया। भालू मामा रोने लगे तो उनके पास बहुत सारे जानवर इकट्ठे हो गए और उन जानवरों ने भालू मामा का ठेला सीधा किया। भालू मामा चला गया और केले बेचने लगा। सभी जानवरों ने एक सभा बुलाई और हाथी को मज़ा चखाने की एक तरकीब सोची। सभी जानवरों ने एक जगह दलदल जमा किया। हाथी खेलता, शोर मचाता आ रहा था। उसने सभी जानवरों को एक साथ देखा तो वह दलदल जानवरों के ऊपर फेंकने लगा। जैसे ही हाथी थोड़ा और आगे बढ़ा वह दलदल में फँस गया। सभी जानवर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे और हाथी से बोले, “अब हमें परेशान करोगे।” हाथी बोला, “अब मैं आप लोगों को कभी परेशान नहीं करूँगा।” तब सभी जानवरों ने मिलकर हाथी को बाहर निकाला।

सोएल खान
नौ वर्ष
दिगन्तर विद्यालय
जयपुर, राजस्थान

चित्र: आकाश गौर
पाँचवीं, जे एस पब्लिक स्कूल
मुरैना, म. प्र.

तितली

भूपेन्द्र कुमार यादव
आठवीं, शा. पूर्व. माध्यमिक शाला
कुसुमकसा, डोण्डी, बालोद, छत्तीसगढ़

तितली रानी, तितली रानी
रंग-बिरंगे पंखोंवाली
लाल-हरे, नीले-पीले
ऐसे कितने रंगोवाली
तितली रानी, तितली रानी
फूलों का रस लेती हो तुम
बच्चे तुमसे करते प्यार
तुम भी करतीं हम से प्यार
तितली रानी, तितली रानी
बड़ी निराली लगती हो तुम
आसमान में उड़ती हो जब
कितनी सुन्दर दिखती हो तुम
तितली रानी, तितली रानी
प्यारी-प्यारी तितली रानी

चित्र: प्रणवी जायसवाल
चौथी, द हेरिटेज स्कूल रोहिणी, दिल्ली

मेरी प्रिय फ्रॉक

मनीषा कुमावत
आठवीं

मेरी एक बहुत अच्छी रेड कलर की फ्रॉक थी जो मुझे बहुत पसन्द थी लेकिन मुझे पता नहीं कि वह कहाँ गई। मेरी दीदी मुझे उस ड्रेस को पहनाकर बहुत अच्छे से तैयार करती थी। अगर मैं उस ड्रैस को याद करती हूँ तो मुझे अच्छा नहीं लगता है। मैं उसी के जैसी फ्रॉक किसी और के पास देखती हूँ तो मुझे ऐसी इच्छा होती है कि मैं उससे ड्रैस लेकर पहन लूँ। मैंने अपनी दीदी से कहा कि वह मुझे वैसी ही ड्रैस दिलाए और मेरी दीदी ने भी कहा कि मैं वैसी ड्रैस तेरे जन्मदिन पर ले आऊँगी। लेकिन फिर भी मैं सोचती हूँ कि मैं वैसी ही फ्रॉक वापस नहीं पा सकूँगी। वह फ्रॉक मुझे इतनी अच्छी लगती थी इतनी अच्छी लगती थी कि मैं उसे किसी को भी हाथ नहीं लगाने देती थी। अगर कोई मेरी वो फ्रॉक लेता तो मैं रो देती थी। अगर वह फ्रॉक मुझे वापस मिल जाए तो मुझे बहुत-बहुत अच्छा लगेगा लेकिन ऐसा नहीं हो सकता।

मानसून ऑफर

एकलव्य की पत्रिकाओं की आजीवन सदस्यता पर पाएँ किताबों का पिटारा
बिलकुल मुफ्त !

6 हज़ार रूपए में बाल विज्ञान पत्रिका 'चकमक' की आजीवन सदस्यता पर पाएँ 15 सौ रूपए की किताबें मुफ्त!

बच्चों के लिए मासिक पत्रिका। विज्ञान, साहित्य और कला के अलावा पहेलियाँ, गतिविधियाँ और चुटकुले भी। बच्चों के लिए लिखी सामग्री और साथ में बच्चों द्वारा लिखे गए लेख व कविताएँ और उनकी चित्रकारी मिलेंगी।

5 हज़ार रूपए में विज्ञान पत्रिका 'संदर्भ' की आजीवन सदस्यता पर पाएँ 12 सौ रूपए की किताबें मुफ्त!

शिक्षकों के लिए द्विमासिक पत्रिका है। इसमें विज्ञान के विभिन्न आयामों के अतिरिक्त गणित, सामाजिक विज्ञान, भाषा, शिक्षकों के अनुभव, शिक्षण तकनीक तथा साहित्य भी शामिल हैं।

सदस्यता लेने के लिए हमें

ईमेल करें –
sales.chakmak@eklavya.in
sandarbh.srote@eklavya.in

फोन करें –
8770163516
9630847498

या

आनलाइन पिटारा शॉपिंग कार्ट www.pitarakart.in का उपयोग करें|
पिटाराकार्ट से स्कीम का लाभ लेने के लिए **"life2018"** कूपन कोड का इस्तेमाल करें !

चन्दा एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण-
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया भुगतान करने के बाद हमें फोन अथवा ईमेल के जरिए ज़रूर सूचित करें|

माथापच्ची

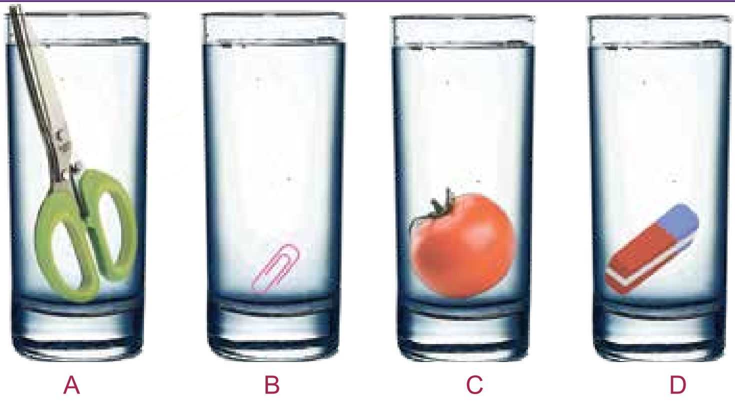

1. चारों में से किस गिलास में सबसे ज़्यादा पानी है? और किस गिलास में सबसे कम?

2. दो बच्चे शतरंज खेल रहे थे। दोनों ने कुल 5 मैच खेले और दोनों ने ही 3-3 मैच जीते। ऐसा कैसे हो सकता है?

3. तीन किसानों का कहना है कि झनक उनका भाई है। लेकिन झनक का कहना है कि उसका कोई भाई नहीं है। कौन झूठ बोल रहा है?

4. सुबह के छह बजे हैं। तुम सो रहे हो। अचानक दरवाज़े की घण्टी बजती है। तुम्हारे अंकल-आंटी अपने बच्चों के साथ आए हैं। वो तुम्हारे साथ ही नाश्ता करना चाहते हैं और इसलिए साथ में जैम की बोतल, ब्रेड का पैकेट, शहद, जूस और दूध की बोतल लाए हैं। तुम सबसे पहले क्या खोलोगे?

फटाफट बताओ कि

एक स्टैंडर्ड पेपर
क्लिप में कितने
मोड़ होते हैं?

(3)

ऊपर काँटा नीचे काँटा
अन्दर बैठे अण्डा
गर्मी का मीठा फल है
खाने में लगता ठण्डा

(लीची)

चौकी पर बैठी एक रानी
सिर पर आग बदन में पानी

(मोमबत्ती)

एक किले के दो ही द्वार
उसमें सैनिक लकड़ीदार
टकराएँ जब दीवारों से
खत्म हो जाए उनका संसार

(माचिस)

सुडोकू-9

1	3			4	
		5		2	
3					5
		6	3		
	1			5	4
	5		2		

सुडोकू

दिए हुए बॉक्स में 1 से 6 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 6 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको छह डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 6 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है करके तो देखो, जवाब अगले अंक में तुमको मिल जाएगा।

नीना की नानी और नानी की नीना की उम्र

पहला बच्चा	-	जब नानी 19 साल की थीं।
दूसरा बच्चा	-	जब नानी 19 + 4 यानी 23 साल की थीं।
तीसरा बच्चा	-	जब नानी 23 + 4 यानी 27 साल की थीं।
चौथा बच्चा	-	जब नानी 27 + 4 यानी 31 साल की थीं।
पांचवा बच्चा	-	जब नानी 31 + 4 यानी 35 साल की थीं।
छठवीं बच्ची	-	जब नानी 35 + 4 यानी 39 साल की थीं।

तो नानी की उम्र 39 + 37 यानी 76 साल है।
नीना की उम्र 76/4 यानी 19 साल है।

कितने सिक्के

सवाल से एक बात तो समझ में आती है कि सिक्कों की संख्या ऐसी होनी चाहिए जो आधे में और तिहाई में बँट सके। यानी उसे 2 और 3 दोनों से भाग दिया जा सके। ऐसा न हो तो क्या होगा? मान लो कि पाँच सिक्के हैं तो उनका आधा तो 2.5 हुआ और 5 का एक तिहाई तो 3.6 हुआ। 0.5 और 0.6 को दिखाने के लिए हम सिक्कों को तोड़कर तो नहीं रख सकते हैं।

तो शुरू करते हैं सवाल का हल ढूँढना। वो पहली संख्या जो 2 और 3 में बँट सके 6 है। अब देखते हैं कि यह सही उत्तर है कि नहीं। शुरू में आधे यानी कि 3 सिक्कों का चित वाला भाग ऊपर है। दो सिक्कों को पलटने से सिर्फ एक का चित वाला भाग ऊपर होगा। 6 सिक्कों में से 1 सिक्का, एक तिहाई नहीं, बल्कि छठा भाग हुआ।

अब अगली संख्या जो 2 और 3 दोनों से विभाजित हो सके, वो 12 है। इनमें से आधे यानी, 6 सिक्कों का चित ऊपर है। दो सिक्कों को पलटने पर 4 सिक्कों का चित ऊपर की तरफ रहेगा। इस तरह 4/12 यानी एक तिहाई सिक्कों का चित वाला भाग ऊपर रहेगा। तो सही जवाब है - एना के मेज़ पर कुल 12 सिक्के हैं।

माथापच्ची जवाब

1. B वाले गिलास में सबसे ज्यादा और C वाले गिलास में सबसे कम।
2. दोनों अलग-अलग बच्चों के साथ शतरंज खेल रहे थे।
3. कोई भी झूठ नहीं बोल रहा। तीनों किसान झनक की बहनें हैं।
4. दरवाज़ा

सुडोकू-8 का जवाब

4	1	6	2	5	3
5	2	3	1	4	6
1	3	5	4	6	2
6	4	2	3	1	5
3	6	4	5	2	1
2	5	1	6	3	4

चित्र पहेली

► बाएँ से दाएँ

▼ ऊपर से नीचे

23 ▼

1			■	2	■	3		4
	■	■	5		6		■	
7	8		■	■	9		10	■
■		■	11			■		■
12		13	■	■		■	14	15
■	16		17		■	18	■	
19	■	20		■	■	21		
22			■	23			■	■
	■	24			■	25		

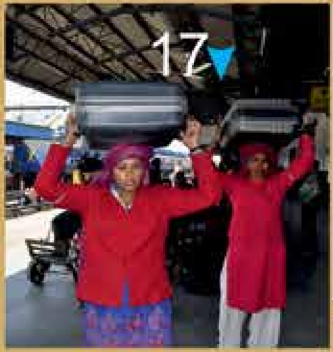

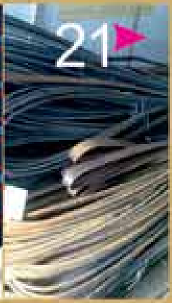

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/261/2018-20

गाय मिली पर थाने में

प्रभुदयाल श्रीवास्तव

चित्र: सार्थक नायर
आठवीं, सेंट जोसेफ को-एड स्कूल
भोपाल, म. प्र.

ता-ता थैया, छन्न बटैया,
चोरी हुई कल्लू की गैया।
चोरी अब पकड़ेगा कौन?
थानेदार खड़ा है मौन।
ढूँढे शहर-गाँव सारे।
लोग फिरे मारे-मारे।
की तलाश तहखाने में,
गाय मिली पर थाने में।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र.
से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन